

हिम-प्रभा

89-90वां संयुक्तोक्त



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी)

हिमाचल प्रदेश, शिमला

हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2021 उद्घाटन समारोह



हिम - प्रभा

स्वत्वाधिकार:	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हिमाचल प्रदेश, शिमला
प्रकाशन:	हिम-प्रभा
प्रकाशक:	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), हिमाचल प्रदेश, शिमला
अंक:	89-90वां
मूल्य:	राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुख्य पृष्ठ परिचय:	कार्यालय प्रधान महालेखाकार, हिमाचल प्रदेश

निवेदन

- सम्माननीय रचनाकारों से रचनाएं भेजते समय निम्नलिखित नियमों का पालन करने का विनम्र अनुरोध है:-
- रचनाएं टंकित हो तथा दो प्रतियों में प्रेषित की जाएं जो स्पष्ट तथा सुवाच्य हों।
- प्रकाशनार्थ रचनाएं हिन्दी कक्ष, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला में उपलब्ध कराई जाएं।
- अस्वीकृत रचनाएं लौटाने का प्रावधान नहीं है। अतः रचनाओं की मूल प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।

भविष्य में भी आपकी रचनाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

सम्पादक मण्डल

सम्पादक मण्डल

मुख्य संरक्षक

सुश्री ऋतु ढिल्लों

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

एवं

श्री सतीश कुमार गर्ग

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

श्री अभिषेक कुमार

उप-महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

अध्यक्ष, संपादन मंडल

संपादन सलाहकार समिति

श्री दिनेश शर्मा

श्रीमती सूरज नेगी

श्री राहुल कुमार

श्रीमती सीमा सहोता

श्री सोमनाथ

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सहायक लेखा अधिकारी

सहायक पर्यवेक्षक

संपादन एवं आकल्पन

श्रीमती प्रोमिला शर्मा

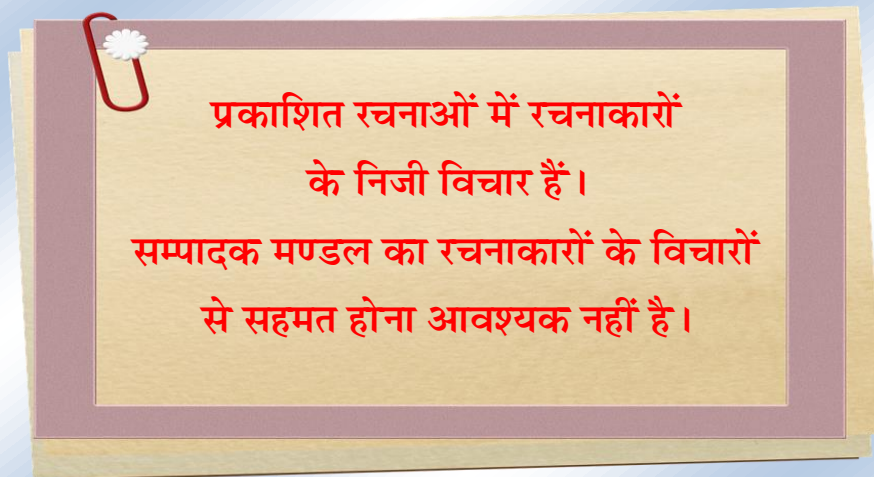
श्रीमती समता खानचंदानी

श्री अजय सिंह

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

डी.ई.ओ.



अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA



प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।”

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।”

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल ‘कंठस्थ’ को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए ‘लीला हिंदी ऐप’,- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप तथा ‘ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप’ भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह ‘प्र’ की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह ‘प्र’ की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021


(अमित शाह)





ऋतु ढल्लों
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

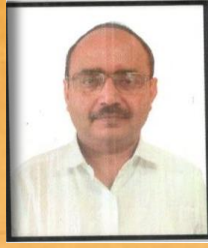
संदेश

हिन्दी पत्रिका 'हिम-प्रभा' का 89-90वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। 'हिम प्रभा' पत्रिका हमारे विभाग में न केवल हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रही है अपितु कार्यालय में सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा को भी पुष्पित पल्लवित कर रही है।

चुनौती में अवसर तलाशते हुए हिम-प्रभा का ई-संस्करण अपने नए कलेवर में सामने है। डिजिटल माध्यम की सहज सुलभता भाषा एवं संस्कृति के मेलमिलाप को मंच प्रदान करती है।

हिम-प्रभा की सफलता में कार्यालय के प्रबुद्ध रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल का पूर्णतः योगदान है। पत्रिका के प्रकाशन में लेखन सामग्री व प्रकाशन प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आप सबके सतत् सहयोग से यह पत्रिका और भी रोचक एवं समृद्ध बनेगी।

ऋतु ढल्लों
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
एवं मुख्य संरक्षक 'हिम-प्रभा'



सतीश कुमार गर्ग
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

संदेश

‘हिन्दी दिवस’ के अवसर पर सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। ‘हिम-प्रभा’ का 89-90वां अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। ‘हिम प्रभा’ पत्रिका हमारे कार्यालय में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रही हैं।

हमारा देश अनेक संस्कृतियों और भाषाओं का देश है। विविधता से भरे इस देश में हिन्दी एक संपर्क भाषा के रूप में पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम कर रही है। राजभाषा हिन्दी का संवर्धन करने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने कार्यालय का कार्य करने के लिए हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। राजभाषा हिन्दी के माध्यम से हम अपने विचारों तथा मनोभावों को दूसरों तक सहजता तथा सरलता से पहुंचा सकते हैं।

‘हिम प्रभा’ का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ‘हिम प्रभा’ के इस अंक में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने लेखों, रचनाओं तथा कविताओं के द्वारा पत्रिका को अधिक रोचक बनाने में अथक प्रयास किया है।

मैं पत्रिका के सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सतीश कुमार गर्ग
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
एवं संरक्षक ‘हिम-प्रभा’

गणतंत्र दिवस 2021 की कुछ झलकियां



स्वतंत्रता दिवस समारोह की कुछ झलकियां



अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार का नाम	पृष्ठ
1.	हिन्दी दिवस	श्री दिनेश शर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	1
2.	पहाड़ों की रानी	श्रेयस गर्ग, पुत्र श्री सतीश कुमार गर्ग, प्रधान महालेखाकार	2
3.	कुछ अच्छी बातें - कुछ कड़वा सच	श्री मनोहर ग्रेवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	3
4.	समय	सरोज, एम.टी.एस.	4
5.	आम आदमी	श्री बलराम, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	5
6.	मनोवृत्ति	श्रीमती सुनीता ग्रेवाल, पत्नी श्री मनोहर ग्रेवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	6
7.	नारी को आरक्षण नहीं सम्मान चाहिए	श्रीमती शशी जुल्का, पत्नी श्री एन.के जुल्का वरिष्ठ लेखा अधिकारी (सेवानिवृत्त)	7-8
8.	मेरे देश का सिपाही	श्रीमती मन्निका कश्यप, वरिष्ठ लेखापरीक्षा	9
9.	धरती का भगवान - किसान	श्री सचिन कुमार, लेखापरीक्षक	10
10.	संविधान - एक परिचय	सक्षम शर्मा, सुपुत्र श्रीमती प्रोमिला शर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	11-13
11.	मैं किताब हूँ	श्री अरूण कुमार, डी.ई.ओ.	14
12.	जीवन है चलने का नाम	श्रीमती नीना ठाकुर,	15
13.	बेटियाँ	श्री अजय सिंह, डी.ई.ओ.	16
14.	जनसंख्या नियंत्रण और इसके लाभ	श्री दया सागर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	17-20
15.	जीवन के मायने	श्री हेतराम जसपाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	21
16.	सूर्य का संदेश	सुश्री कीर्ति चतुर्वेदी, वरिष्ठ लेखाकार,	22
17.	तालाबंदी के कुछ अनुभव	शुभम शर्मा, सुपुत्र श्री गंगा सागर शर्मा वरिष्ठ लेखाकार	23-24
18.	कोरोना	श्रीमती सुनिता देवी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	25
19.	स्मृतियों में शेष	श्री विनय कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	26

20.	सयुंक्त राष्ट्र संघ -वीटो की अहमियत	सक्षम शर्मा	27
21.	मां के बाद	श्रीमती शालिनी वशिष्ठ, एम.टी.एस.	29
22.	मां है वा	ईना सोनी, सुपुत्री सोम नाथ सोनी	30
23.	कार के करिश्मे	श्री एन.के जुल्का वरिष्ठ लेखा अधिकारी (सेवानिवृत्त)	31-32
24.	ग़ज़ल	सुश्री समता खानचंदानी, कनिष्ठ. हिन्दी अनुवादक	33
25.	सफ़र	श्रीमती विजय लक्ष्मी, सहायक लेखा अधिकारी	34
26.	बाढ़ - बिहार की आम समस्या	श्री अरूण कुमार, डी.ई.ओ.	35-37
27.	सुन लो अन्नदाता की पुकार	श्री बिमल भारती, लेखापरीक्षक	38
28.	धरती का भगवान - किसान	श्री सचिन कुमार, लेखापरीक्षक	39
29.	छोटी सी जिन्दगी	श्री सरदार रविन्दर सिंह, लेखापरीक्षक	40
30.	क्या खोया क्या पाया ?	अनामिका शर्मा	41-42
31.	आसमां जीतने दो	श्री संजीव कुमार, डी.ई.ओ.	43
32.	एहसास - एक प्रेम पत्र	श्री हेतराम जसपाल, व.ले.प.अ.	44-47
33.	रात का जादू	श्री प्रभात कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	48
34.	खुली आंखों के ख्वाब	अनामिका शर्मा	49-50
35.	कोशिश कर	श्रीमती शैली भाटिया	51
36.	जिंदगी	श्री दुर्गेश नैय्यर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	53
37.	तीन लघु कहानियां	सुश्री समता खानचंदानी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	54-57



हिन्दी दिवस – एक त्यौहार

 दिनेश शर्मा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी की व्यवहारिकता, वैज्ञानिकता तथा सरलता को ध्यान में रखकर इसे राजभाषा स्वीकार किया था। तभी से हम प्रत्येक वर्ष गर्व एवं सम्मान के साथ 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं।

यह बात हम सभी जानते हैं कि भाषा संस्कृति की वाहिक होती है और किसी भी राष्ट्र, समाज और संस्कृति की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है। समस्त देशवासियों में स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले और अब तक राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में हिन्दी भाषा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के समय हिन्दी ने विभिन्न प्रांतों को एक सूत्र में पिरोने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

आज के संदर्भ में देखा जाए तो हिन्दी भाषा की स्थिति सम्मानजनक स्थान पर तो है लेकिन व्यवहार में दूसरे दर्जे पर है। जैसे ही सितम्बर का महीना आता है वैसे ही सारे सरकारी आयोजन, हिन्दी में काम को बढ़ावा देने वाली घोषणाएं तथा विभिन्न तरह के सम्मेलन आयोजित होते हैं। हिन्दी में काम करने वाली शपथें ली जाती हैं, और पता नहीं क्या क्या लेकिन ज्यों ही सितम्बर का महीना गुजरेगा लोग सब भूल जाते हैं एवं हिन्दी फिर से अगले वर्ष का इंतजार करती है। आज हिन्दी दिवस एक औपचारिकता बन कर रह गया है। लगता है लोग अपनी गुम हो चुकी मातृभाषा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हिन्दी दिवस मनाने का अर्थ गुम हो रही हिन्दी को बचाने का प्रयास करने जैसा लगता है।

दुनिया के लगभग सारे विकसित व विकासशील देश अपनी भाषा में काम कर रहे हैं। केवल हमारे यहां ही हमारी भाषा को काम की दृष्टि से छोटा समझा जाता है।

इस दुखद स्थिति में भारतेंदु हरीशचंद्र जी की पंक्तियां याद आती हैं:

“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल”

जब तक हम अपनी भाषा को सशक्त नहीं करेंगे, हमारा राष्ट्र कभी सशक्त नहीं हो सकता हमारे सामने चीन, जापान, फ्रांस जैसे कई विकसित देशों के उदाहरण हैं जिन्होंने भाषा को देश की उन्नति में बाधक नहीं समझा। तो फिर हम इस कार्य में क्यों पीछे रहे, इस दिशा में हमें अभी भी बहुत काम करने हैं, जैसे बच्चों की शिक्षा पूरी तरह हिन्दी माध्यम में हो एवं लोगों में हिन्दी की चेतना को जगाने का प्रयास करना होगा। आज के दौर में हम देखते हैं कि हर क्षेत्र में लोग अंग्रेजी को बढ़ावा दे रहे हैं जबकि बहुत से विकसित देश हिन्दी की लिपि देवनागरी को एक विकास शील लिपि की दृष्टि से देखते हुए इसे भविष्य में अपनाने की योजना तैयार कर रहे हैं। हिन्दी की शब्दावली अंग्रेजी से कई गुणा बड़ी है। अतः हमें धीरे धीरे हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना होगा एवं उसे सम्मान जनक दृष्टि से देखना होगा। यहाँ मेरे कहने का यह अर्थ नहीं कि आने वाली पीढ़ी को अंग्रेजी से वंचित रखा जाए लेकिन हमें यह भी देखना होगा कि किस तरह अंग्रेजी ने हमारी संस्कृति का विदेशीकरण कर उसे कमजोर किया। हमें इसे रोकना होगा एवं हिन्दी को फिर उसके प्रधान स्तर पर ले जाना होगा जिससे देश अपनी भाषा के साथ उन्नति करे।

पहाड़ों की रानी

श्रेयस गर्ग, कक्षा: VII
पुत्र: श्री सतीश कुमार गर्ग,
प्रधान महालेखाकार

हिमाचल की राजधानी,
पहाड़ों की रानी।
है यहाँ का अलग ही मिज़ाज,
होता था कभी यहाँ से पूरे देश पर राज।

है यह बहुत बड़ा पर्यटन स्थल,
यहाँ की सुंदरता देखने लायक है हर पल।
यहाँ पर ठंड पड़ती है बहुत करारी,
और उसके साथ होती है बर्फबारी।

होती है यहाँ पर बहुत प्यारी शाम,
भिन्न-भिन्न यहाँ के पर्यटन स्थलों के नाम।
उनमें से हैं कुफरी और नारकण्डा,
वहाँ का मौसम आमतौर पर रहता है ठंडा।

जाखू में हनुमान जी ने रखे थे पैर,
वहाँ तक पहुँचने में हो जाती है अच्छी खासी सैर।
खरीददारी का यहाँ का श्रेष्ठ स्थान,
मॉल रोड़ है उसका नाम।

एडवॉर्ड स्टडी में हुआ था शिमला समझौता,
वाईस रिगल लॉज भी है जिसे कहा जाता।
देवदार के पेड़ पाये जाते हैं शिमला में,
शिमला का नाम पड़ा है शामली माता पे।

सेब है यहाँ का मुख्य फल,
है यहाँ का सुरक्षित और सफल कल।
है यह स्वर्ग शिमला पहाड़ों से घिरा,
ले जाते हैं लोग यहाँ से नए यादों का सिरा।



कुछ अच्छी बातें - कुछ कड़वा सच

मनोहर गेवाल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



- ◆ गलत सोच और गलत अंदाजा इंसान को हर रिश्ते से गुमराह कर देते हैं... ।
- ◆ शब्द और सोच दूरियां बढ़ा देते हैं..... क्योंकि ... कभी हम समझ नहीं पाते और कभी हम समझा नहीं पाते ।
- ◆ बोलना तो सब जानते हैं... पर कब, और क्या बोलना है.... यह बहुत ही कम लोग जानते हैं... ।
- ◆ जब दिल में “वहम”, दिमाग में “ज़िद” और बातों में “मुकाबला” आ जाए... तो समझ लीजिए कि रिश्तों की हार निश्चित है....।
- ◆ घमंड के अंदर सबसे बुरी बात ये होती है कि वो आपको कभी महसूस नहीं होने देगा .. कि “आप गलत हो”।
- ◆ बात “संस्कार” और “आदर” की होती है, वरना जो सुन सकता है... वो सुना भी सकता है .. ।
- ◆ “कमज़ोर” बदला लेते हैं , “मजबूत” माफ़ करते हैं, और “समझदार” नज़रअंदाज करते हैं.....।
- ◆ झुको केवल उतना ही जितना सही हो.... बेवजह झुकना केवल दूसरों के अहं को बढ़ावा देता है ...।
- ◆ अच्छे लोगों की परीक्षा कभी न लीजिए क्योंकि वे पारे की तरह होते हैं । जब आप उन पर चोट करते हैं तो वे टूटते नहीं हैं, बल्कि फिसल कर चुपचाप आपकी जिन्दगी से निकल जाते हैं.....।
- ◆ रिश्ते इसलिए भी नहीं सुलझ पाते हैं क्योंकि लोग गैरों की बातों में आकर अपनों से उलझ जाते हैं.....।
- ◆ झूठ बोलने वाले अपनी बात को साबित करने के लिए जोर-जोर से चिल्लाते हैं ... और सच खामोश रहकर भी सब कुछ कह जाता है....।
- ◆ मोह खत्म होते ही, खोने का डर भी निकल जाता है, चाहे दौलत हो, “वस्तु” हो, “रिश्ते” हो, या “जिन्दगी” ...।
- ◆ किसी भी व्यक्ति की सहनशीलता एक खींचे हुए रबड़ की तरह होती है.... एक सीमा से ज्यादा खींच जाने पर उसका टूटना तय है ।
- ◆ कभी-कभी ऐसी भी स्थिति पैदा हो जाती है कि जो गलती हमने कभी की ही नहीं उसकी भी माफ़ी माँगनी पड़ती है ... उसका कारण यह है कि उस समय हम गलती नहीं... रिश्ते देखते हैं की कहीं यह प्यारा सा रिश्ता टूट न जाए....।
- ◆ दिखावा और झूठ बोलकर व्यवहार बनाने से अच्छा है, सच बोलकर दुश्मन बना लो, तो आपके साथ कभी विश्वासघात नहीं होगा.....।
- ◆ जरूरी नहीं कि हर शिकायत शब्दों में ही की जाए..... कुछ नाराजगियां चुप रहकर भी जताई जाती हैं.....।
- ◆ “दुआएं” जमा करने में लग जाओ साहब.... खबर पक्की है “दौलत” और “शौहरत” साथ नहीं जाएगी....।
- ◆ बड़ी अजीब है ये दुनिया, यहाँ झूठ बोलने से नहीं... सच बोलने से रिश्ते टूट जाते हैं
- ◆ जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश ही नहीं की
- ◆ लोग दिखावे के दीवाने हैं.... और हम हैं कि सच्चाई मुंह पर बोल देते हैं।
- ◆ समय और समझ दोनों एक साथ बस किस्मत वालों को ही मिलती है.... क्योंकि अक्सर समय पर समझ नहीं आती और समझ आने पर समय निकल जाता है



सरोज

जो मनुष्य समय का महत्व नहीं समझ सकता वह कभी सफल नहीं हो सकता।

मैं समय को प्रणाम करती हूँ। क्योंकि समय मन से भी महान है। समय मन को प्रभावित करता है। यह समय ही है जो एक भिखारी को राजा बना देता है और राजा से भिखारी बना देता है। समय बड़ा बलवान है। समय एक बुद्धिमान व्यक्ति को मूर्ख बना देता है और मूर्ख व्यक्ति को बुद्धिमान बना देता है। समय ही इन्सान को इन्सान का मित्र बनाता है तथा समय ही इन्सान को इन्सान का शत्रु भी बनाता है। समय इतना बलवान है कि वह किसी का इन्तजार नहीं करता।

समय ही है जो शान्ति पैदा कर सकता है और अशान्ति भी पैदा कर सकता है। समय मन से भी महान है इसलिए मैं समय को प्रणाम करती हूँ। इन्सान समय के साथ चले तो समय इन्सान का मित्र बन सकता है। यदि इन्सान समय के साथ ना चले तो यही समय इन्सान का शत्रु भी बन सकता है। लेकिन मैं आप को बताती हूँ कि यदि समय से बढ़ कर कुछ है तो वह है आत्मा। जो समय का संचालन करती है। जो मनुष्य इस मृत्यु लोक में आता है, उसका जाना निश्चित है, यह समय की सच्चाई है। क्योंकि समय किसी का इन्तजार नहीं करता। वह आत्मा है जो समय से परे है और समय को गतिशील कर सकती है और समय को बदल सकती है। समय से बढ़ कर इस दुनिया में कोई गुरु नहीं है, समय सबसे बड़ा गुरु है। अतः समय किसी का दास नहीं। जब तक आप अपने मन के भीतर है तब तक आप समय के प्रभाव में रहते हैं, लेकिन जब आप यह अनुभव करते हैं कि यह आत्मा है, जो पंचतत्व से परे है तब आप समय को संचालित कर सकते हैं। यह तब संभव हो सकता है जब समय आपके अधीन हो।

बुरा वक्त तो सबका आता है,
कोई बिखर जाता है तो कोई निखर जाता है।

जिंदगी में अगर बुरे वक्त नहीं आते
तो अपनों में छुपे गैर,
और गैरों में छुपे अपने
कभी नजर नहीं आते।

आम आदमी



लेखक:- बलराम
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मुस्कुरा कर देते हुए
किसी आदाब का जवाब
जहन में चलता रहता है
शाम का हिसाब
घर से दफ्तर तक का रास्ता
एक फहरिस्त है
जिसमें दर्ज है वो तमाम काम
जिन्हें पूरा करना है हर हाल
कि जब शाम को लौटू
जो लौटा सकूं
सबके हिस्से की हंसी
और मेरे घर में गूंजे खुशी
नन्हें कदमों की शैतानी
बदस्तूर चलती रहें
और इत्मीनान से भरी आंखे
मुझे मोहब्बत से तकती रहे
अपनी छोटी सी दुनिया का
मैं हूं सुल्तान
तमाम अमीरों - खास जमात में
मैं हूं आदमी आम.. ॥

मनोवृत्ति



श्रीमती सुनीता ग्रेवाल
पत्नी श्री मनोहर ग्रेवाल
व0 लेखापरीक्षा अधिकारी

कानों में ज़हर घोलने की,
दूसरों के घर तोड़ने की,
ये कला लोगों को खूब आती है ।

अपनी ही बात सुनाने में,
औरों का मज़ाक उड़ाने में,
लोगों की बाँछे खिल जाती है ।
तारीफ़ की मिठास चखने से,
तानों की कड़वाहट चखाने से,
ही लोगों के पेट की गुडगुड दूर होती है ।
हंसी दुश्मन के चेहरों पे,
खुशी जीवन में औरों के
देखकर लोगों की नींद उड़ जाती है ।

आगे बढ़ने की होड़ में,
पीछे रह जाना दौड़ में
की फिक्र से लोगों के होंठों से मुस्कराहट फुर.. हो जाती है ।
अपना धन सम्पत्ति आधा,
दूसरों के पास ज्यादा
की सोच लोगों का सुख चैन हर लेती है ।
आकर्षण रुचि दूसरों के यार में,
कमी अपनी नार में
लोगों को बहुत नज़र आती है ।

सारांश -

प्रतिस्पर्धा, इर्ष्या, काम, क्रोध, लालच और बैर
जब मन में पनपते हैं,
तो इंसान की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है

अर्थात् - इंसान इन सब बातों के बगैर खुश नहीं रह सकता ।

नारी को आरक्षण नहीं सम्मान चाहिए

शशी जुल्का
पत्नी श्री एन. के. जुल्का
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

चारों वेदों में, अनेक मन्त्रों में सृष्टिकर्ता परमात्मा को भी ब्रह्म शब्द से सम्बंधित कर उसे सृजनात्मक वृहद शक्ति के रूप में स्मरण किया गया है, ठीक इसी प्रकार प्राचीन ऋषि-मुनियों ने सृष्टि चक्र के संचालन में नारी जाति के योगदान व महत्ता को समझकर नारी को ही ब्रह्म शब्द से पुकारा है। वास्तव में नारी प्रभु की दृष्टि में वह वरदान है कि यदि इस धरा पर नारी का अवतरण नहीं होता तो सृष्टियज्ञ का चलना ही असंभव था। हमारे देश में नारियों को सम्मानित करने का इतिहास जितना प्राचीन है। उतना ही पुराना नारियों को प्रताड़ित और अपमानित करने का इतिहास भी है। अपमान और सम्मान करने का यह समानान्तर सिलसिला वैदिक युग से आज तक चल रहा है।

वैदिक साहित्य में नारियों को सदियों से नारायणी, देवी, श्रद्धा, शक्तिरूपा जैसे सम्मानसूचक अलंकारों से विभूषित किया जा रहा है। उसी नारी को राक्षसों द्वारा ही नहीं बल्कि देवताओं के द्वारा भी प्रताड़ित किया जाता रहा है। समाज को बचाने के लिए देवताओं ने नारी को ही आगे किया और उसकी शक्ति की परीक्षा बार-बार ली जाती रही। राक्षसों ने उसे दैहिक रूप से तथा देवताओं ने उसे भावनात्मक रूप से अत्याचारों का शिकार बनाया। अपने ऊपर हुए अत्याचारों का प्रतिकार करने के लिए उसे इन दोनों से समान रूप से संघर्ष करना पड़ रहा है जैसे वैदिक काल में करना पड़ रहा था। बहुत पुराणपंथी बात न भी करे तो स्वतंत्रता के बाद देश में नारियों की दशा और दिशा को सुधारने के लिए अनेक कानून बने और उनका कड़ाई से पालन कराने के लिए महिला आयोगों का गठन किया गया, परन्तु जिस तेजी से कानून का निर्माण हुआ उसी तेजी से अपराधों और पारिवारिक अत्याचारों का सिलसिला भी चलता रहा।

स्वतन्त्रता के चौहत्तर वर्षों के बाद भी हम चाहे जितने भी यह दावे करें कि हमने नारियों को पुरुषों के बराबर सरकारी और समाजिक तौर पर अधिकार सम्पन्न कर दिया हैं, परन्तु समाज में यथार्थरूप से आज भी नारी पर अत्याचारों का सिलसिला चल ही रहा है अन्यथा क्या कारण है कि पुरुष क्षेत्रों में कार्य करने वाली नारी को दैहिक और मानसिक अत्याचारों का सामना करना पड़ता है? आज क्यों वह आत्महत्या और हत्या जैसे जघन्य अपराध करने पर विवश हो रही है। एक जानकारी के अनुसार देश में प्रतिदिन औसतन 16 महिलायें प्रताड़ना का शिकार हो रही हैं। बलात्कार और पारिवारिक हिंसा इन अपराधों में सर्वोपरि है। उसके बाद भी हम यह दावा कर रहे हैं कि हमारे देश में नारी पुरुषों के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है। हमारे यह झूठे ढकोसलेपूर्ण दावे सांख्यिकीय दृष्टि से तो अच्छे लगते हैं परन्तु वास्तविकता की कसौटी पर निर्मूल है।

आज यह लक्ष्मी ट्रेन ड्राइवर बन जाती है, तो पूरा देश अपनी पीठ थपथपाने लगता है परन्तु जब वही नारी सेना में अपने सहकर्मियों की शिकार हो जाती है तो उसकी मौत पर उसके वरिष्ठ अधिकारी यह श्रद्धांजलि देते हैं कि वह यहां आई क्यों, उसके बिना भी हमारा काम चल जाएगा, प्रगति और उन्नति के इतने ऊँचे ग्राफ के बाद भी हमारे समाज में नारियों के कार्यों को पुरुषों के मुकाबले में उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना उसके समान योग्यता और सामर्थ्य के पुरुष को दिया जाता है। फिर यह नारी प्रगति की छद्म घोषणायेँ क्यों? सामाजिक क्षेत्र और शासकीय स्तर पर महिलाओं को बराबरी का दर्जा और सम्मान दिलाने के लिए महिला आयोग, नारी उत्पीड़न का विरोध करने के लिए महिला संगठनों का निर्माण तो किया गया परन्तु उन की उपलब्धियाँ उंगलियों पर गिनी जाने से ज्यादा आगे नहीं बढ़ सकी। पुरुष द्वारा उत्पीड़न की शिकार एक गरीब और अति मध्यम वर्ग की महिला आज भी अपनी पीड़ा को लेकर समाज के डर के कारण इन संगठनों के पास तक नहीं पहुंच पा रही है।

विचारणीय प्रश्न यह है कि कठोर कानून या अत्याधिक अधिकारों के अलंकारों से सुशोभित नारियों को उनके सहज मानवीय अधिकारों से सुसज्जित किया जा सकता है। कानून से समाज का नज़रिया या मानसिकता बदली नहीं जा सकती, क्योंकि कानून के अनुसार तो हत्या करने पर मृत्यु दण्ड और बलात्कार करने पर लम्बी सजा का प्रावधान है, परन्तु क्या उसके भय से हत्याएं और जघन्य अपराध बन्द हो रहे हैं, उत्तर है नहीं, बिल्कुल नहीं।

किसी बुराई और अपराध को रोकने के लिए कठोर कानून बनाना समस्या का समाधान करना नहीं है। आज आवश्यकता समाज की मनोवृत्ति बदलने की ज्यादा है। इसके लिए समाज के तथाकथित ठेकेदारों को अपनी मानसिकता बदलनी होगी। वैचारिक परिवर्तन का अर्थ अत्याधुनिकता का खुलापन नहीं होना चाहिए। समाज की प्रगति का आधार नारियों का भोगवादी उपयोग नहीं है। जैसे कि आजकल समाज में पश्चिमी भोगवादी संस्कृति को अपनाकर हमारे देश के सामाजिक संगठन आदि नारी मुक्ति का ढिंढोरा पीट रहे हैं। यह प्रयोग भी नारियों पर अत्याचार का आधुनिक तरीका है। इस प्रकार संकीर्ण विचारधारा से तो हम पुनः आदिम युग में पहुंच रहे हैं और समाज में वहशीपन फैला रहा है। नारी प्रगति के नाम पर अर्धनग्न नारियों से कैंटवॉक करवाकर और नारी की देह को आय का साधन बनाकर उसका उपयोग कर हमें प्रगति और आधुनिकता का जो जग जाहिर ढोल पीट रहे हैं, यह हमारी आदिम युग में वापसी और नारी मुक्ति की दिशा में हमारी नीतियों की असफलता का प्रतीक है।

अतः आज समाज में नारियों को सम्मान और सुरक्षा चाहिए। नारियां जिस भी क्षेत्र में कार्यरत हैं उस क्षेत्र में उनकी प्रतिभा और योग्यता का उचित और मर्यादित मूल्यांकन किया जाए तो फिर किसी महिला आरक्षण बिल जैसे ढकोसलों की आवश्यकता नहीं है। उस में सामर्थ्य और शक्ति की कमी नहीं है। उसके धैर्य की परीक्षा ना ली जाएं।

मेरे देश का सिपाही

वो जवान था, इरादों का मजबूत था
दिल में जुनून, खौंफ से महरूम था
इरादों में था उसके ना जाने कितना दम
बढ़ा लिए उसने देश के लिए अपने कदम



श्रीमती मनिा कश्यप
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

शायद इसी देश में कहीं और उसका भी घर था
कहीं कोई उसकी याद में भी रो रहा था
मां के आंसू भी न रोक सके वो इरादे
ना भूला वो देश के लिए कर अपने वादे
कहीं धूप, कहीं ठण्ड, खड़ा रहा करने वो रखवाली
शहीद होने पर उसको मिली सिर्फ ताली
देश की चाहत में उसने अपना वजूद खो दिया
आज फिर इस देश ने एक वीर सिपाही खो दिया।



धरती का भगवान - किसान

✍ लेखक:- सचिन कुमार
(लेखापरीक्षक)

अपना कलेजा चीरने देती है, उफ तक नहीं करती है धरती माता,
बाद में जाना कौन है हमारा विधाता, पहले जिस पर कदम रखा था वो थी हमारी धरती माता।

आज प्याज की बढ़ती कीमत का एक नशा सा छा गया,
मगर कोई देखो तो, किसान का घर सड़क पर आ गया।

एक बच्चे के मुख से किसान को भगवान कहना, दिल को भा गया,
शायद कलयुग का ये भगवान, सड़क पर आ गया।

पत्थरों की मूरत को हर रोज पूजता है इन्सान, डॉक्टर और किसानों को भूल गया जो धरती पर होते
हैं भगवान,
हर प्राणी की पेट की भूख को मिटा देता है किसान, ये मत भूल इन्सान कि धरती पर साक्षात
भगवान है किसान।

पहले एक कमाता था, तो सब खाया करते थे,
एक दूसरे का साथ निभाया करते थे।

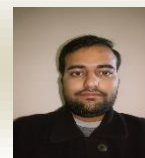
सुख-दुःख में काम आया करते थे,
मगर आज कमाते सब हैं, लेकिन एक साथ खाया नहीं करते।

जब पेट में अनाज जाता है, तो बहुत आनंद आता है,
फिर भी न जाने क्यों तू भगवान समान किसान को भूल जाता है।

अब वक्त रहते सबको जगाना होगा, और भगवान समान किसानों को उनका हक दिलाना होगा।



संविधान – एक परिचय



शुभम शर्मा
सुपुत्र श्रीमती प्रोमिला शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संविधान शब्द हम अक्सर सुनते हैं। भारत के संविधान के कुछ अंश स्कूल के पाठ्यक्रम में भी शामिल है। जिन्हें पढ़ने का मौका नहीं मिला उन्होंने भी संविधान के बारे में सुना अवश्य होगा, आखिर हमारे सार्वजनिक जीवन में संविधान का महत्व ही इतना अधिक है।

आधुनिक समय में कोई भी देश कानून के द्वारा चलता है, फिर चाहे उसकी राजनीतिक व्यवस्था लोकतांत्रिक हो या तानाशाही आज के समय में राज्य के दायित्वों में इतना अधिक विस्तार हुआ है कि संहिताबद्ध कानूनों (Codified Laws) और नौकरशाही के बिना देश चलाना मुश्किल है।

संविधान किसी भी देश का मौलिक कानून होता है, जिसके आधार पर अन्य सारे कानून बनाए जाते हैं। संविधान भी अनेक प्रकार के होते हैं मुख्यतः लिखित व अलिखित। अमरीका (U.S.A.) का संविधान एक लिखित संविधान का उदाहरण है जबकि ब्रिटेन (U.K.) का संविधान अलिखित संविधान की मिसाल पेश करता है। भारत में संघीय राजनीतिक व्यवस्था है, राज्य तथा केंद्र स्तर पर स्वतंत्र सरकारें हैं, ऐसे में विवाद की संभावना रहती है। संघीय प्रणाली में विवाद टालने और सुलझाने में एक लिखित संविधान आवश्यक होता है, अतः भारत का संविधान भी लिखित है।

भारत का संविधान, संविधान सभा द्वारा रचा गया। 1935 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पहली बार भारत के संविधान के निर्माण के लिए आधिकारिक रूप से संविधान सभा के गठन की मांग रखी। 1946 में कैबिनेट मिशन योजना के अन्तर्गत संविधान सभा का गठन हुआ।

संविधान सभा के कुछ सदस्य चुने हुए तथा कुछ मनोनित थे। सभा की शुरुआती संख्या 383 थी जो कि अक्टूबर 1947 में 299 रह गई। सभा की पहली बैठक 09 दिसम्बर 1946 को हुई। सभा के सबसे वरिष्ठ सदस्य डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा को सभा का अन्तरिम अध्यक्ष बनाया गया तथा चुनाव के बाद डॉ० राजेन्द्र प्रसाद सभा के पहले अध्यक्ष चुने गए। आगे चलकर संविधान सभा ने विश्व भर के संवैधानिक दस्तावेजों का अध्ययन किया जिनका प्रभाव भारत के संविधान पर भी पड़ा। ऐसा ही एक महत्वपूर्ण दस्तावेज, 'उद्देश्य प्रस्ताव' 13 दिसंबर के दिन पंडित नेहरू ने सभा में पेश किया। इसमें संवैधानिक संरचना के ढांचे एवं दर्शन की झलक थी। इस प्रस्ताव को 22 जनवरी 1946 को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

संविधान सभा ने विभिन्न कार्यों को करने के लिए कई समितियों का गठन किया। इसमें 08 बड़ी समितियां थी तथा अन्य छोटी। ऐसी ही एक महत्वपूर्ण समिति थी प्रारूप समिति जिसके अध्यक्ष डॉ० बी आर अंबेडकर थे। इस समिति का काम अन्य सभी समितियों के कार्यों को एकीकृत करके संविधान का प्रारूप तैयार करना था। डॉ० अंबेडकर ने सभा में 04 नवम्बर 1948 को संविधान का अन्तिम प्रारूप पेश किया। तीन बार पढ़े जाने के बाद 26 नवम्बर 1949 को संविधान को पारित घोषित कर दिया गया और इस पर अध्यक्ष व सदस्यों के हस्ताक्षर लिए गए। इस संविधान में प्रस्तावना, 395 अनुच्छेद और 08 अनुसूचियां थी। संविधान के कुछ भाग 1949 में लागू कर दिए गए परन्तु पूर्णतः संविधान 'पूर्ण स्वराज' दिवस की याद में 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया, इस दिन हम 'गणतन्त्र दिवस' मनाते हैं।

भारत का संविधान विश्व का सबसे लंबा लिखित संविधान है। वर्तमान में इसमें एक प्रस्तावना, 470 अनुच्छेद और 12 अनुसूचियां हैं।

हमारा संविधान विभिन्न स्रोतों से निहित है। संविधान ने अपने अधिकतर उपबंध विश्व के कई देशों के संविधानों और भारत शासन अधिनियम, 1935 के उपबंधों से लिए हैं।

संविधानों को लचीलेपन और कठोरता की दृष्टि से भी वर्गीकृत किया जाता है। एक कठोर संविधान में संशोधन करना कठिन प्रक्रिया के माध्यम से होता है। लचीले संविधान में संशोधन की प्रक्रिया आसान होती है। भारत का संविधान कठोर और लचीला, दोनों का मिला जुला रूप है। संविधान के कुछ अनुच्छेदों में संशोधन करना आसान है और कुछ में कठोर। संविधान के कुछ भाग ऐसे भी हैं जिन्हें बिना संशोधन के भी बदला जा सकता है जैसे राज्यों के नाम, उनका क्षेत्रफल आदि।

भारत के संविधान में एकात्मकता की ओर झुकाव के साथ संघीय व्यवस्था का प्रावधान है। संविधान संघीय सरकार की स्थापना करता है। यद्यपि भारतीय संविधान में बड़ी संख्या में एकात्मकता और गैर संघीय लक्षण भी विद्यमान हैं। भारतीय संविधान ने ब्रिटेन के संसदीय तंत्र को अपनाया है, जिसकी स्थापना केन्द्र और राज्य दोनों स्तरों पर की गई है।

भारत का संविधान संसदीय संप्रभुता एवं न्यायिक सर्वोच्चता में समन्वय स्थापित करने की कोशिश करता है। अतः संविधान में एकीकृत एवं स्वतंत्र न्यायपालिका की स्थापना की गई है।

मौलिक अधिकार भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताओं में से एक है। संविधान के तीसरे भाग में 06 मौलिक अधिकारों का वर्णन है। अनुच्छेद 14-18 समानता का अधिकार, अनु 19-22 स्वतन्त्रता का अधिकार, अनु 23-24 शोषण के विरुद्ध अधिकार, अनु 25-28 धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार, अनु 29-30 सांस्कृतिक व शिक्षा का अधिकार और अनु 32 में संवैधानिक उपचारों का अधिकार शामिल है।

संविधान के चौथे भाग में राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धांतों का उल्लेख है। इन्हें आमतौर पर तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है— सामाजिक, गांधीवादी तथा उदार-बौद्धिक। यह सामाजिक व आर्थिक लोकतन्त्र को बढ़ावा देते हैं। सरकार इन्हें लागू करती है परन्तु मौलिक अधिकारों की तरह कोई व्यक्ति इनको लागू करवाने हेतु न्यायालय नहीं जा सकता।

मौलिक अधिकारों के साथ-साथ इन्हें संतुलित करते हुए भाग 4 'अ' में नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों का वर्णन भी है। संविधान में संशोधन के माध्यम से इन्हें शामिल किया गया था। इन्हें भी कानूनी रूप से लागू नहीं करवाया जा सकता हालांकि, सरकार कानून बना कर लागू करवाना चाहे तो करवा सकती है, यह अलग बात है। हमारा संविधान एक धर्म-निरपेक्ष राज्य की स्थापना करता है। धर्मनिरपेक्षता की नींव मौलिक अधिकारों में है हालांकि, 42 वें संविधानिक संशोधन द्वारा संविधान की प्रस्तावना में 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द जोड़ा गया। संविधान में धर्म तथा भाषा के आधार पर अल्पसंख्यकों को विशेष अधिकार प्राप्त हैं। महिलाओं, बच्चों, अनुसूचित जाति, जनजाति तथा पिछड़ा वर्ग के लिए भी विशेष प्रावधान संविधान में हैं। भारत का संविधान भारत के सभी नागरिकों को जिन्होंने 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर ली है, मतदान का अधिकार देता है। इसमें किसी भी तरह की विशेष योग्यता की बाधा नहीं है। यह लोकतन्त्र को मजबूत करता है।

स्वतन्त्र न्यायपालिका के अलावा संविधान कुछ अन्य स्वतन्त्र निकायों की भी स्थापना करता है जो लोकतन्त्र के पारदर्शी, स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष चरित्र के लिए आवश्यक हैं। इनमें निर्वाचन आयोग, भारत के नियंत्रक महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, राज्य लोक सेवा आयोग आदि शामिल हैं। भारतीय संविधान का एक अनूठा प्रावधान आपातकाल भी है। संविधान में तीन प्रकार के आपातकाल का प्रावधान है। राष्ट्रीय आपातकाल, राज्य में आपातकाल (राष्ट्रपति शासन) तथा वित्तीय आपातकाल, आपातकाल की स्थिति में प्रभावशाली ढंग से निपटने के लिए यह प्रावधान किए गए हैं। इस स्थिति में राज्यों का नियंत्रण केन्द्र के हाथों में चला जाता है। इस प्रक्रिया में बिना संशोधन के राजनीतिक व्यवस्था संघीय से एकात्मक हो जाती है।

भारत का संविधान एक जीता जागता दस्तावेज है जिसका स्वरूप समय की आवश्यकता के अनुसार ढला है। लागू होने के बाद से आज तक संविधान में सौ से अधिक संशोधन किए जा चुके हैं।

यह एक बहुत ही रोचक दस्तावेज है जो भारत की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित है तथा इन्हें प्रभावित भी करता है। हम सब राजनीतिक हैं, राजनीति में हिस्सा लेते हैं, केवल चुनाव लड़ना ही इसकी एकमात्र आवश्यकता या पैमाना नहीं है, अपने मत का उपयोग करना भर ही आपकी राजनीति में हिस्सेदारी तय कर देता है। मेरी नजर में हर व्यक्ति को समय निकाल कर एक बार संविधान जरूर पढ़ना चाहिए।

मैं किताब हूं

अरूण कुमार
(डी०ई०ओ० 'बी')

मैं कलम से जन्मी, स्याही से सनी
पन्नों-पत्रों से ढकी,
हर आवाम की आवाज हूं
मैं ही कानून, मैं ही संविधान हूं।
काले, लाल, नीले, हरे, पीले कई वर्णों से सजी,
ऋषि-मुनियों, विद्वानों का वरदान हूं
मैं ही वेद, मैं ही उपनिषद, मैं ही पुराण हूं
मैं ही रामायण का प्रेम, महाभारत का बलिदान
हूं॥

किसका जन्म, किसकी मृत्यु
किसकी सभ्यता, किसका संस्कार
कौन राजा, कौन है रंक
क्या है सत्य, क्या है झूठ
सबको जानती, सबको मानती हूं मैं
पंडितों का पांडित्य हूं, वैज्ञानिकों का विज्ञान हूं
हर अविष्कार की सूत्रधार हूं॥
धरती का ज्ञान हूं, सागर का उफान हूं
ज्वाला सी गर्म, जल सी शांत हूं

मैं ही गीता मैं ही कुरान हूं
मैं इतिहास, मैं भूगोल, मैं ही विज्ञान हूं।

तुलसी- कबीर के दोहे हैं मुझमें
तानसेन की तान, गालिब की शायरी है मुझमें
जिसने मुझको साधा है, जिसने मेरी तपस्या की
उसका भविष्य बनाती हूं
हर मंजिल की राह है मुझसे
अज्ञान को दूर करें वो ज्ञान है मुझमें
हर अंधेरा दूर करे वो प्रकाश है मुझमें ॥

मैं बात करती हूं भूत की, वर्तमान की भविष्य की
हर एक-एक पल की
खुशी की, गम की, जीत की, हार की
नफरत की, प्यार की, हर एक एहसास की,
मैं ही दादी-नानी की कहानी हूं॥

मैं हूं तो कई मंजिलें हैं,
मैं हूं तो तनहाई में भी महफिलें हैं
मैं सबकी सच्ची साथी हूं, मैं कोई और नहीं
मैं किताब हूं॥



जीवन है चलने का नाम



नीना ठाकुर

‘औरों की परवाह छोड़’,
मैं क्यों न खुद में मस्त रहूं,
लोगों से क्या लेना मुझे,
तो क्यों न खुद में व्यस्त रहूं।

खुद से कुछ अपनी कहूं,
खुद में कुछ अग्नि भरूं,
तराशने की खुदको खुदसे,
क्यों न कोई तरकीब करूं।

जो छूट गया कहीं पीछे,
क्यों उसके लिए बेचैन रहूं,
गलत न कर पाऊं सही
तो खुदसे क्यों निराश रहूं?

जीवन है चलने का नाम तो
क्यों न सब भूल चलती ही रहूं,
खुद से कुछ अपनी कहूं
खुद में कुछ अग्नि भरूं
तराशने की खुद को खुदसे
क्यों न कोई तरकीब करूं

क्यों करूं परवाह किसी की,
जो मन चाहे वो मैं करूं,
जो बीत गया सो बीत गया,
क्यों उसके लिए फिर आह भरूं।
नहीं जानते तुम शायद समय
कैसे बदलता है
कभी अच्छा समय, कभी बुरादौर
बस यूं ही चलता रहता है।

बदलाव अगर है नियम जिंदगी का,
तो मैं भी क्यों पीछे रहूं,
बदल लूं खुदको इस पल में,
क्यों औरों की परवाह करूं।

जीना जो मुझे है..
तो क्यों न, औरों की फिक्र छोड़,
खुद में ही मैं मस्त रहूं.,
खुद से कुछ अपनी कहूं,
खुद में कुछ अग्नि भरूं,
तराशने की खुद को खुदसे,
फिर क्यों न कोई तरकीब करूं।

बेटियां



अजय सिंह
डी.ई.ओ.

बेटी दी है ईश्वर ने कभी ठुकराना नहीं
फूल जैसा चेहरा उसका कभी मुरझाना नहीं
बेटी के प्यार को कभी आजमाना नहीं
नाजुक है वो, उसे कभी रूलाना नहीं
पिता का तो अभिमान होती है बेटियां
घर की शान होती है बेटियां
उसकी आंखे कभी नम न होने देना
उसकी जिन्दगी से कभी खुशियां कम न होने देना
करना उसकी हर ख्वाइश पूरी
रखना ना उसकी कोई इच्छा अधूरी
उंगली पकड़ कर जिसको चलाया था तुमने
जीवन भर पढ़ा लिखा कर प्यार से पाला था तुमने
बहुत छोटा सा सफर होता है बेटी का हमारे साथ
बहुत कम वक्त के लिये वह होती हमारे पास
असीम दुलार पाने की हकदार है बेटियां
समझो भगवान् का आशीर्वाद है बेटियां।

जनसंख्या नियंत्रण और इसके लाभ

 दया सागर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
ए.आर.सी. (राजस्व अनुभाग)

जनसंख्या किसी भी देश के लिए महत्वपूर्ण संसाधन है। प्रतिभावान, शिक्षित बुद्धिजीवी, मेहनती और शक्तिशाली नागरिक देश के मजबूत कर्णधार हैं और देश की प्रगति और सुरक्षा के लिए अति आवश्यक हैं। लेकिन ये तभी तक सही हैं, जब तक देश में उनके पालन पोषण और रहन सहन के लिए पर्याप्त संसाधन हैं। जैसे किसी परिवार के पास 10 व्यक्तियों के रहने खाने के संसाधन हैं। अगर उनकी संख्या 12 हो जाए तो भी उनका भरण-पोषण आसानी से हो जाएगा और शक्ति भी अधिक हो जाएगी। संख्या 15 होने के बाद कुछ मुश्किल होगी, लेकिन उनकी संख्या 20 होने पर उनका जीना मुश्किल हो जाएगा। उन्हें पर्याप्त मात्रा में खाने और रहने को नहीं मिलेगा तो वो मिल बांटकर खाएंगे या फिर आपस में लड़ेंगे। यही हालात आज विश्व में बन रहे हैं। ऊपर से सभी शांति की बात करते हैं, लेकिन सभी युद्ध के लिए तैयार बैठे हैं, विनाशकारी हथियार बनाने में लगे हैं क्योंकि सभी देशों में असुरक्षा की भावना है। कुछ देश अपना व्यापार बढ़ाने के लिए दूसरे देशों को नुकसान पहुंचा रहे हैं, दूसरे देशों की जमीन पर कब्जा कर रहे हैं। ऐसा क्यों ? क्योंकि उनके पास अपनी जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। 1927 में विश्व की जनसंख्या लगभग 2 अरब थी लेकिन 2021 में ये लगभग 8 अरब से ज्यादा है और अगर ये ऐसे ही बढ़ती गई तो अगले 50 सालों में ये लगभग 15 अरब हो जायेगी। अगर आज विश्व में इतनी समस्या है तो 50 साल बाद जब जनसंख्या लगभग 15 अरब हो जायेगी तो विश्व का क्या हाल होगा। विश्व की अधिकतर समस्याओं का कारण जनसंख्या में अनियंत्रित वृद्धि है। भारत के पास विश्व के क्षेत्रफल का 2.3 प्रतिशत भाग है तथा विश्व की जनसंख्या का लगभग 18 प्रतिशत भाग है। भारत जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है, अगर जनसंख्या इसी दर से बढ़ी तो जल्दी ही पहले स्थान पर होगा ।

अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि के जो परिणाम भारत में होंगे, वहीं परिणाम विश्व में भी दिखाई देंगे । जनसंख्या नियंत्रण करने के कुछ लाभों का विवरण इस प्रकार है :-

1. कृषि योग्य भूमि में विस्तार और जनसंख्या घनत्व में कमी

आंकड़ों के अनुसार 1950 में भारत की जनसंख्या लगभग 37 करोड़ थी और जनसंख्या घनत्व 115/वर्ग किलोमीटर था, 2001 में जनसंख्या लगभग 103 करोड़ थी तथा जनसंख्या घनत्व 325/वर्ग किलोमीटर था, 2011 में जनसंख्या लगभग 125 करोड़ तथा जनसंख्या घनत्व 382/वर्ग किलोमीटर था, और 2021 में जनसंख्या 140 करोड़ के लगभग है तथा जनसंख्या घनत्व 464/वर्ग किलोमीटर के लगभग है। जबकि जनसंख्या की बढ़ोतरी की दर में लगातार कमी आई है लेकिन भारत के क्षेत्रफल के अनुपात में ये बढ़ोतरी भी बहुत अधिक है। अगर जनसंख्या इसी दर से बढ़ती रही तो आने वाले 50 वर्षों में जनसंख्या 200 करोड़ के लगभग हो जाएगी और जनसंख्या घनत्व 650/वर्ग किलोमीटर हो जाएगा। जनसंख्या वृद्धि के कारण लगातार जनसंख्या घनत्व में वृद्धि होती जा रही है। इतनी बड़ी आबादी के लिए घर और अन्य सुविधाओं के लिए संरचनाएं तैयार करने के कारण भी कृषि योग्य भूमि कम हो रही है। मतलब ये हुआ कि किसान भी ज्यादा हो गए हैं और उनके पास कृषि योग्य भूमि में भी कमी आई है। अगर इसी तरह कृषि योग्य भूमि कम होती रही तो इससे आने वाले समय में छोटे किसानों के पास परिवार में भूमि के बंटवारे की वजह से भूमि न के बराबर हो जायेगी और आने वाले समय में लोगों के पास भोजन की कमी की संभावना हो सकती है।

अगर अगले 50 वर्षों में जनसंख्या को 100 से 120 करोड़ के बीच में नियंत्रित कर दिया जाते तो दोबारा जनसंख्या घनत्व 320 से 350 के लगभग होगा । जिससे किसानों के पास कृषि योग्य भूमि अधिक होगी और उसकी

उपज से वो अपने परिवार का पालन पोषण सही से कर पाएंगे और देश के पास भी भोजन की कमी कभी नहीं होगी।
अतः देश में खुशहाली होगी ।

2. सुविधाओं में वृद्धि और भीड़ भाड़ से छुटकारा

वर्तमान में अधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रत्येक जगह सुविधाओं के लिए मारामारी है, हर जगह एक बहुत बड़ी कतार नजर आती है। चिकित्सालयों, कार्यालयों, विद्यालयों, न्यायालयों, ट्रेन, बस आदि में हर जगह भीड़ ही भीड़ है। न्यायालयों में वर्षों लग जाते हैं। अगर बिना आरक्षण किए यात्रा करनी पड़े तो बस या ट्रेनों में बैठने की जगह भी नहीं मिलती। वैसे तो हमारे देश के पास उचित मात्रा में संसाधन हैं, लेकिन जनसंख्या में बढ़ोतरी का अनुपातसंसाधनों में कहीं ज्यादा है। राजस्व कम है और खर्चा ज्यादा है। जनसंख्या के जिस अनुपात में कर्मचारी, डॉक्टर, पुलिस, न्यायाधीश, शिक्षक, बसे, ट्रेन, चिकित्सक इत्यादि होने चाहिए, वो भी नहीं है ।

अगर जनसंख्या को 100 से 120 करोड़ के बीच में नियंत्रित कर दिया जाये तो चिकित्सालयों, विद्यालयों, न्यायालयों, कार्यालयों, ट्रेन, बस आदि में भीड़ की कमी हो जाएगी तथा नागरिकों को उचित तथा बढ़िया सुविधाएं मिल सकेंगी और सुविधाओं को उपलब्ध करवाने में भी कम समय लगेगा । जिससे लोगों में संतुष्टि का स्तर बढ़ेगा देश की प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था गुणवत्ता बढ़ेगी।

3. कुपोषण और गरीबी से छुटकारा

कुपोषण और गरीबी भारत की एक बड़ी समस्या है। भारत में पांच साल से कम उम्र के 35% बच्चे कुपोषित हैं। 15 से 49 साल की उम्र की लगभग आधी महिलाएं कुपोषित हैं। व्यापक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण, 2016-18 से पता चलता है कि देश में पांच साल से कम उम्र के 35% बच्चे छोटे कद के, 33% कम वजन के हैं और 17% बच्चे कमजोर हैं। बच्चों और महिलाओं में अधिक वजन, छोटा कद, लंबे समय से भोजन में पर्याप्त पोषक तत्वों की कमी का नतीजा है। वित्त वर्ष 2021-22 का बजट पेश करते हुए सरकार ने बच्चों और महिलाओं में कुपोषण की समस्या दूर करने के लिए 2,700 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं और हर वर्ष ऐसे प्रावधान किए जाते हैं। वही 22 % भारतीय गरीबी की रेखा से नीचे है जिनके भरण पोषण के लिए सुविधाएँ देने के लिए भी सरकार को बहुत धन खर्च करना पड़ता है। कोई ये तर्क देगा जिसके अंदर इच्छाशक्ति है तो वो कुछ भी करके रोजगार प्राप्त कर लेगा । एक नौकरी और 10 हजार बेरोजगार हो तो, नौकरी तो एक को ही मिल सकती है । जैसे कमाने वाले तो कोई भी दुकान लगाकर भी गुजारा कर सकते हैं लेकिन अगर दुकानें लगाने वाले 10 करोड़ हो जाए और उपभोक्ता केवल 100 करोड़ हो तो कैसे गुजारा होगा। आवश्यकता तो प्रत्येक कार्य की है लेकिन जब रोजगार जनसंख्या के अनुपात में होंगे तो सभी को रोजगार के उचित अवसर मिलेंगे तो इससे आर्थिक अपराधों में भी कमी आएगी और इस कारण सभी एक सम्मानपूर्वक जीवन का निर्वाह कर सकते हैं।

सभी विकसित देशों की जनसंख्या भारत से बहुत कम है, विकसित देश रशिया, अमेरिका और कनाडा जो क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत से काफी बड़े हैं, इन सभी देशों की जनसंख्या भारत से बहुत कम है। इनमें अमेरिका की जनसंख्या सबसे ज्यादा लगभग 34 करोड़ है । विकसित देशों में कुपोषण की समस्या बहुत कम है क्योंकि उनके पास पर्याप्त मात्रा में धन और संसाधन हैं, जिसे वो अपने नागरिकों के कल्याण और सुविधाओं के लिए व्यय कर सकते हैं।

भारत जितना धन गरीबी की रेखा और कुपोषण को दूर करने के लिए दे रहा है वो जनसंख्या के अनुपात से बहुत कम है। जनसंख्या को 100 से 120 करोड़ के बीच में नियंत्रित कर दिया जाये तो कुपोषितों और गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की संख्या में भी कमी आएगी। बेरोजगारों की संख्या में कमी आएगी और उनकी प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि होगी और सरकार द्वारा वर्तमान समय में जो धन उनके कल्याण के लिए दिया जा रहा है, उसे उनके जीवन में गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है और कुपोषण और गरीबी को मिटाया जा सकता है। इससे सभी को अच्छी शिक्षा और जीवन में रोजगार के उचित अवसर प्राप्त होंगे। सभी के पास रोजगार होने के कारण सरकार को सब्सिडी भी कम देनी पड़ेगी, इससे सरकार का राजस्व भी बढ़ जायेगा ।

4. भू-ताप में कमी तथा ऑक्सीजन, भू-जलस्तर और स्वच्छ जल के स्रोतों में वृद्धि

अत्यधिक जनसँख्या के कारण घर व भोजन के लिए कृषिभूमि के लिए जंगलों को काटा जा रहा है और हिमखंडों के नजदीक रहने पर मजबूर है जिससे हिमखंडों को भी नुकसान पहुँच रहा है। जंगलों में कमी के कारण वातावरण में वृक्षों के द्वारा उत्पन्न ओक्सिजन में कमी आ रही है तथा अधिक उद्योगों और यातायात के साधनों के कारण हर प्रकार का प्रदूषण बढ़ रहा है और जहरीली गैसों में वृद्धि हो रही है। जिस कारण वातावरण अत्यधिक दूषित हो चुका है और इस वजह से भूताप में भी वृद्धि हो रही है। 1981 से 2021 तक भूताप में वृद्धि की दर 0.18 डिग्री सेल्सियस है, भूताप में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस वृद्धि होने पर पृथ्वी पर जीवन नष्ट होने की सम्भावना हो सकती है। वर्तमान में हिमखंडों के आयतन में काफी कमी आई है भूताप बढ़ने से आने वाले समय में अगर हिमखंड पिघल जायेंगे और नदियों में पानी समाप्त हो जायेगा और जमीन में पानी भी बिलकुल सूख जायेगा जिस कारण कृषि करना असंभव हो जायेगा और पीने का पानी भी समाप्त हो जाएगा। समुद्र का जलस्तर बढ़ जायेगा, जिस कारण कई देश पानी में डूब जाएंगे, जिससे भूमि की मात्रा में और अधिक कमी हो जाएगी।

अगर जनसँख्या को 100 से 120 करोड़ के बीच में नियंत्रित कर दिया जाये तो पेड़ों को काटने की आवश्यकता नहीं होगी बल्कि अधिक वृक्ष लगाकर जंगलों के घनत्व को बढ़ाया जा सकेगा जिससे वृक्ष कार्बन को अधिक से अधिक ग्रहण करके अधिक से अधिक ऑक्सिजन का उत्पादन कर सकेंगे। प्रदूषण कम होने से और वृक्षों के कारण भूताप में कमी आएगी तथा जनसंख्या में कमी से हिमखंडों के पास जनसंख्या घनत्व कम होगा, जिससे हिमखंडों के आयतन में वृद्धि होगी और नदियों में पर्याप्त पानी होगा, जिसके कारण भू जल स्तर में भी वृद्धि होगी। किसानों के लिए सिंचाई के साधन प्रयाप्त होंगे और फसल में भी वृद्धि होगी जिससे देश और विश्व में खुशहाली होगी।

5. वन्य जीवन की सुरक्षा

जनसंख्या वृद्धि के कारण इतनी बड़ी आबादी के लिए घर और अन्य सुविधाओं के लिए संरचनाएं तैयार करने के लिए जंगलों को लगातार काटा जा रहा है और मनुष्य वन्य जीवों के स्थान उजाड़ कर वहाँ बस गए हैं, जिस कारण वन्य जीवों को भोजन और सुरक्षित निवास नहीं मिल पाता। इस कारण बन्दर, कुत्ते और लंगूर शहरी आबादी में पहुँचकर उत्पात मचाते हैं। बाकी वन्य प्राणी जो शहरी स्थानों में नहीं जा सकते वो भोजन न मिलने की वजह से समाप्त हो रहे हैं।

जनसँख्या नियंत्रण के पश्चात जंगलों को काटने की जरूरत नहीं पड़ेगी बल्कि जंगलों का और विकास होगा जिससे वन्य प्राणियों को जंगलों में पर्याप्त भोजन और स्थान मिलेगा जिससे वन्य जीवन का भी विस्तार और विकास होगा, जो कि पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित रखने के लिए अति आवश्यक है।

6. भ्रष्टाचार में कमी

अत्यधिक जनसँख्या के कारण बेरोजगारी दर भी काफी अधिक 10 प्रतिशत के लगभग है जो 2021 में कोरोना के कारण सब कुछ बंद होने के कारण 30 प्रतिशत से अधिक तक पहुँच गई थी। 100 नौकरी के लिए दस हजार आवेदन आने से लोग तरह तरह से प्रयत्न करके नौकरी पाने की कोशिश करते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को भरण पोषण के लिए संसाधन चाहिए। ऐसा होने से भ्रष्टाचार की सम्भावना बढ़ जाती है और इससे कई बार उचित व्यक्ति को रोजगार नहीं मिल पाता। जिसे धन और चापलूसी के कारण रोजगार मिला है, वो तो दूसरों से इसी चीज की अपेक्षा रखेगा। अत्यधिक जनसँख्या के कारण आज हर सुविधा (कार्य) प्राप्त करने के लिए कतार है, जिससे कई सुविधाओं को पाने के लिए काफी समय लगता है। लोग जल्दी सुविधा पाने के लिए तरह-तरह से प्रयत्न करते हैं, किसी भी प्रकार से ये सुविधाएँ प्राप्त करना चाहते हैं और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं।

अगर वर्तमान में जनसँख्या को 100 से 120 करोड़ के बीच में नियंत्रित कर दिया जाये रोजगार भी जनसँख्या के अनुपात में होगा, अगर सभी को रोजगार आसानी से मिलेगा। सुविधाओं के लिए भी लोग कम होंगे और कार्यालयों में

सही लोग होंगे, जिससे सभी के कार्य आसानी से हो जायेंगे, इससे भ्रष्टाचार को पूरी तरह से समाप्त किया जा सकता है ।

7. विश्व में शांति की स्थापना

आज बहुत से देश ऐसे हैं जो संसाधनों के लिए दूसरे के देशों पर कब्जा करना चाहते हैं या दूसरे देशों की कुछ भूमि को हथिया चुके हैं । कुछ देश अपने देश के नागरिकों को अपने देश से निकाल रहे हैं । चीन, बंगला देश, म्यान्मार, इराक, इरान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इसराइल, फलिस्तीन, सीरिया आदि कई उद्धाहरण हैं ।

भारत भी इस समस्या का शिकार है, भारत की जमीन पर भी पाकिस्तान, चीन, ने कब्जा कर रखा है । पाकिस्तान, बांग्लादेश , नेपाल, म्यान्मार, आदि कई देशों से लोग भागकर या रोजगार के लिए भारत में आते हैं और अवैध रूप से देश में रहते हैं । जो आगे चलकर हमारे देश और समाज के लिए बड़ा खतरा साबित हो सकता है ।

ऐसा खतरा प्रत्येक देश के लिए है और इसके लिए निरंतर युद्ध भी होते रहते हैं । कई देश तो जनसंख्या इसलिए बढ़ाना चाहते हैं ताकि वो युद्ध में काम आ सके और पूरे विश्व पर उनका अधिकार हो सके । बिना बात मरने और मारने के लिए इंसानों की आबादी बढ़ाना एक घटियाँ सोच के आलावा कुछ नहीं है ।



अगर प्रत्येक देश अपने क्षेत्रफल और संसाधनों के अनुपात में अपनी जनसँख्या नियंत्रित कर ले तो उनके नागरिकों को रोजी रोटी के लिए किसी दूसरे देश में शरण लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। ऐसे प्रत्येक देश में नागरिकों के पास अगर पर्याप्त मात्रा में संसाधन है तो उन्हें भी दूसरे नागरिकों की भूमि और संसाधनों को हथियाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

अगर प्रत्येक देश के पास अपनी जनसँख्या की जरूरत से ज्यादा संसाधन है तो किसी देश को दूसरे देशों पर कब्जा करके उसकी भूमि और संसाधन हथियाने की जरूरत नहीं पड़ेगी बल्कि अधिक संसाधनों के कारण वो दूसरे देशों की मदद करेंगे। भूमि विवाद के कारण अनावश्यक युद्धों को रोका जा सकता है। जिससे विश्व में शांति की स्थापना की जा सकती है और वसुधैव कुटुम्बकम् की भारतीय विचारधारा को चरितार्थ किया जा सकता है।

"जीवन के मायने"

लेखक:- हेतराम जसपाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रेम और भलाई में
झूठ-सच की लड़ाई में
मानवीय संवेदनाओं का फूल
पल में मुरझा जाता है।

ध्यान रखना।

तपती धूप में जलकर
निस्वार्थ भाव से कर्मकर
इंसानियत से ऊठकर ऊपर
जज्बात यही जीने का होता है।

याद रखना।

जीवन तो माटी का पुतला है
एक ठोकर में बिखर जाएगा
दीन-हीन की सेवा का मर्म
मन को असीम सुकून देता है।

विश्वास रखना।

जज्बा-ए-प्रेम सीने में भरा रहे
संकल्प दिशावान धरा रहे
मंजिल फिर दूर नहीं होती
हर कठिनाई तितर-बितर हो जाती है।

विश्वास रखना।

आगे बढ़ने वालों की राह में
अड़चने लाखों बार आती है
हौंसला बुलंद हो अगर
बड़े-से-बड़ा दुश्मन भी पस्त हो जाता है।

याद रखना।

चैन की नींद के लिए
महल या दलीचे की नहीं जरूरत
रूखी-सूखी भी मेवा लगती है
संतोषधन इसी में मिल जाता है।

विश्वास रखना।

मन के दर्पण में झांककर
सबकुछ साफ-साफ दिखता है,
कर्म-धर्म का लेखा-जोखा ही
अंतिम समय इंसान के साथ जाता है।

ध्यान रखना।

प्रतिकूल परिस्थितियों में तपना
हर मनुष्य की कसौटी होती है
लग्न-परिश्रम जब एक होता है।
जिंदगी को आनंद वही मिलता है।

विश्वास रखना।

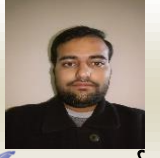


सूर्य का संदेश

कीर्ति चतुर्वेदी
वरिष्ठ लेखाकार पेंशन-03

पहाड़ों से उन वादियों को
हमेशा देखती हूँ मैं।
सूर्य को आसमों में आते
ढलते निहारती हूँ मैं।
सोचती हूँ कई बार की सूर्य की
इन किरणों की कितनी अहमियत है।
आसमों छूते इन पेड़ों को,
खुशबू बिखरते उन फूलों को
दौड़ते हुए लोगों को
और रुकी हुए जिन्दगी को
ये सूर्य ही तो आस देता है,
सुनहरी किरणों में लपेट के
गले लगाकर कहता है
की उठो तुम, अपने कर्म करते चलो तुम
मेरी तरह निस्वार्थ, निष्पक्ष और नितदिन
पहाड़ों से उन वादियों का
हमेशा देखती हूँ मैं!

तालाबंदी के कुछ अनुभव



शुभम शर्मा

सुपुत्र श्री गंगा सागर शर्मा

वरिष्ठ लेखाकार

24 मार्च 2020 को एक अभूतपूर्व घटना घटी। भारत के प्रधानमंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) ने तालाबंदी की घोषणा करते हुए सभी जहाँ वे थे वहीं रहने की अपील करी। देश थमने जा रहा था। प्रधानमंत्री की घोषणा जरूर अचानक हुई परन्तु ऐसा नहीं था कि वह यह एक अप्रत्याशित घटना थी। तालाबंदी के कयास कई दिनों से लगाए जा रहे थे। कई देश पहले ही यह कदम उठा चुके थे, दुनिया की रफ्तार पर मानो अकुंश लगा दिया गया हो।

मैं उस दिन शिमला में अपने घर पर था। सूचना मिली की कल से शहर में धारा 144 यानी कर्फ्यू लगने जा रहा है। उस समय मन में मिश्रित से भाव थे, कुछ जिज्ञासा, कुछ बेचैनी। इसका कारण था की मेरे जीवन और मेरे शहर दोनों में कर्फ्यू एक अभूतपूर्व घटना थी। इससे पहले कर्फ्यू के बारे में केवल अखबारों और पुस्तकों में पढ़ा था। देश के कई हिस्सों में अक्सर तनाव की स्थिति में कर्फ्यू लगना आम बात है परन्तु यह प्रदेश तो देश भर में प्रसिद्ध ही शांति के लिए है। हिमांशू मिश्र, भारतीय पुलिस सेवा के हिमाचल कैंडर के वरिष्ठ अधिकारी ट्विटर पर अपना अनुभव सांझा करते हुए बताते हैं, कि कई दशकों पहले जब एक बार कर्फ्यू लगा तो पहाड़ के भोले-भाले लोग घरों से निकल कर कर्फ्यू देखने शहर की ओर चल पड़े।

शुरुआती दिन जानकारी के अभाव में असमंजस में कटे। चिंता सता रही थी कि जरूरी सामान की आपूर्ति हो पाएगी या नहीं? कुछ दिनों में स्थिति साफ हुई, प्रशासन ने कर्फ्यू में जरूरी सामान खरीदने की ढील दी। इस ढील में खरीददारी करने जाना भी मेरे लिए एक अनुभव था। जिन आवश्यक वस्तुओं के महत्व को रोजमर्रा के जीवन तवज्जों नहीं दी जाती थी, जिनका होना तय मान लिया जाता था, आज उन्हीं को पाने के लिए सफेद गोले के अंदर कतार में खड़ा होना पड़ रहा था। यह सफेद गोला भारतीयों को अनुशासन से कतार में खड़ा होने के लिए खींचा गया। यह अनुभव दर्शनीय था क्योंकि लोग गोले में थैला रखकर आपस में कोरोना पर चर्चा करते नजर आते थे।

समय के साथ सब इस जीवन को अपनाते चले गए। अंग्रेजी का शब्द न्यू नार्मल प्रचलन में आया। न्यू नार्मल यानी वह कार्यशैली जो तालाबंदी के चलते प्रचलन में आई परन्तु पहले उनकी कल्पना करना मुश्किल था।

दफ्तर का काम घर से किया जाने लगा। इस बहाने लोगों की घर वापसी भी हुई। जो लोग काम के सिलसिले में अपने ही देश में परदेसी हो गए थे, अपने घर अपने गाँव लौटने लगे। भागदौड़ से फुरसत मिली तो बहुतों ने भूली बिसरी रुचि, शौक आदि को समय देना शुरू किया। धूमधाम और दिखावे से भरपूर शादियाँ एक निजी पारिवारिक रस्म बन गईं। हजाम की दुकानों में हाजरी देने वाले अपने घरों में एक दूसरे की हजामत बनाने लगे।

तालाबंदी ने बहुत से मकानों को घर बना दिया। वरिष्ठ पत्रकार रवीश कुमार बताते हैं कि पहले वह घर केवल रात में सोने के लिए आते थे, पूरा समय स्टूडियो में बीतता था। इस न्यू नार्मल ने उन्हें घर में समय बिताने का मौका दिया, घर के कामों में हिस्सा लेने का मौका दिया। ऐसा ही अनुभव अनेक लोगों का रहा।

प्रदूषण जिसने भारत के शहरों में डेरा जमा रखा था मानों छूमंतर हो गया हो। शहरों में समोग (धुंध) परेशानी का सबब हुआ करता था वहां अब वातावरण इतना साफ था कि मैदानी इलाकों से हिमालय की चोटियाँ दिखाई देने लगी। इंसान भीतर गया तो वन्य प्राणी जंगलों से बाहर आ गए, दुनियाभरों के शहरों में देखे जाने लगे जिसकी तस्वीरें सोशल मिडिया पर खूब फैली आज इन बातों को बीते करीब डेढ़ साल गुजर गया। विश्व ने और हमारे देश ने इस दौरान काफी कठिन वक्त देखा और चुनौतियों का सामना किया कुछ समय पहले ही कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर बीती है और तीसरी लहर के आने की आशंका को हम नजर अंदाज नहीं कर सकते। आवश्यक है कि हम कोरोना संक्रमण से बचाव के अनुकूल व्यवहार का पालन करें।

कोरोना



सुनिता देवी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कोरोना है भाई कोरोना !
मास्क हमने नहीं लगाया
तो पुलिस उठक बैठक लगवाती है ।
500 रू का जुर्माना और
साथ में डंडें भी खूब लगाती है ।
हाथ पांव को अच्छे से धोना
कोरोना है भाई कोरोना..

कोरोना है भाई कोरोना !
ब्याह, शादियों, पार्टियों में कम जाना
अपना मास्क हमेशा साथ में ले जाना
अगर ज्यादा भीड़ में जाओगे
तो पहली लहर, दूसरी लहर और
तीसरी लहर से ना बच पाओगे
इन बातों को हमेशा मन में संजोना
कोरोना है भाई कोरोना..

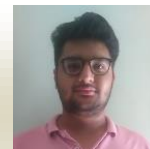
कोरोना है भाई कोरोना !
नहीं कोई थी इसकी दवाई
पर अब वैक्सीन है इसकी भाई
दो डोज़ समय समय पर लगवाना
अपने मन से डर को है भगाना
मुफ्त की वैक्सीन है भाई जरूर लगवाना
कोरोना है भाई कोरोना..

कोरोना है भाई कोरोना !
अपना मास्क कभी भी मत खोना
नहीं तो पड़ेगा रोना, सांस में सांस
तब आएगी जब दुनियां से चला जाएगा कोरोना
कोरोना है भाई कोरोना.. ।।

स्मृतियों में शेष

लेखक:- विनय कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जाना है किस ओर
अपनी अपनी मंजिल सबकी
उनकी अपनी राहें
चार कदम हम साथ चले थे
लिए उम्मीदें मन में
बैठ शिवालिक में आशाएं
थी हिमाचल जैसी
सिमटी हुई थी विरल कुशलता
दुर्लभ है जीवन में
अल्पकाल ही साथ चले थे
छोड़ गए वीराने में
विचरण करते संग सभी थे
बर्फीलों मैदानों में
अल्पकाल का साथ शेष है
कालांतर स्मृतियों में
डगमग करते नन्हे पग को
छोड़ गये पथरीलों में
अभिलाषाएं हैं नवजीवन की
निश दिन नन्हे पग में !!



सक्षम शर्मा

आज के समय में सुरक्षा किसी भी देश के लिए कितना बड़ा मुद्दा है यह हम सभी जानते हैं। आए दिन आतंकी हमले, देशों की आपस में तकरार और कई अन्य कारण। इन सभी मुद्दों के बीच वीटो अहम भूमिका निभाता है। वीटो लेटिन भाषा का शब्द है जिसका मतलब होता है 'मैं अनुमति नहीं देता हूँ'। संयुक्त राष्ट्र संघ की संयुक्त सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य देशों को मिला हुआ विशेषाधिकार ही 'वीटोपॉवर' कहलाता है। संयुक्त राष्ट्र (यू0 एन0) सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्यों चीन, फ्रांस, रूस, यूके और अमेरिका के पास वीटो पॉवर है। आपको बता दूँ, स्थायी सदस्यों के फैसले से अगर इन पांचों में से कोई देश सहमत नहीं है तो वह वीटो पॉवर का इस्तेमाल करके उस फैसले को रोक सकता है। इसलिए लगातार चीन ने दस साल में चौथी बार वीटो पावर का इस्तेमाल कर मसूदा अजहर के खिलाफ प्रस्ताव को खारिज करवाया था। संयुक्त राष्ट्र में किसी भी प्रस्ताव पर तीन बार 'वीटो' पड़ने के बाद उस प्रस्ताव को सिरे से खारिज कर दिया जाता है। अब आप मुझसे यह पूछेंगे कि वीटो पॉवर कैसे मिलती है?

वीटो पॉवर संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 27 में दी गई है।

कोई भी देश तभी वीटो पॉवर प्राप्त कर सकता है जब सुरक्षा परिषद के सारे स्थायी सदस्य पक्ष में मतदान करें और अस्थायी सदस्यों में दो तिहाई इसका समर्थन करें। 16 फरवरी 1946 को सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ ने पहली बार वीटो पावर का इस्तेमाल किया था। लेबनान और सीरिया से विदेशी सैनिकों की वापसी के प्रस्ताव पर सोवियत संघ ने (यू0एस0एस0आर) वीटो किया था। उस समय से अब तक वीटो का 291 बार इस्तेमाल हो चुका है। पर जहाँ किसी चीज के फायदे भी हैं वहाँ उसके नुकसान भी होते हैं। वीटो पॉवर की अलोकतांत्रिक प्रकृति के लिए आलोचना की गई है। एक अकेला देश सुरक्षा परिषद के बहुमत को कड़ी कार्रवाई करने से रोक सकता है, उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका नियमित रूप से इजरायल की आलोचना करने वाले प्रस्तावों का अकेला वीटो करता है।

स्थायी सदस्य उन प्रस्तावों को भी वीटो कर देता है जो उनके अपने कार्यों की आलोचना करते हैं। 2014 में रूस ने क्रीमिया के अपने कब्जे की निंदा करने वाले एक प्रस्ताव को वीटो कर दिया।

कुछ आलोचक इस तथ्य को देखते हैं, कि स्थायी पांच सदस्यों के लिए विशेष वीटों शक्ति कालानुक्रमिक, अन्यायपूर्ण या प्रतिकूल है। पर इस पॉवर के कई समर्थक भी हैं। समर्थक वीटो को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच मानते हैं। थॉमस जी0वीस और जिवोवाना कुएले ने इसे 'हिप्पोक्रेटिक शपथ पर एक भिन्नता: संयुक्त राष्ट्र के निर्णयों से कोई नुकसान नहीं होना चाहिए' कहा। रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन ने संयुक्त राष्ट्र के संस्थापकों के 'गहन ज्ञान' की प्रशंसा की, वीटो शक्ति को अंतर्राष्ट्रीय स्थिरता के आधार के रूप में संदर्भित किया। अंत में इस शक्ति का किस तरह इस्तेमाल होता है वो तो उस देश की नीयत पर ही निर्भर करता है। बाकी भारत को यह अहम् अधिकार कब मिलता है, ये तो समय ही बताएगा।

महिला दिवस समारोह



“मां के बाद ”



शालिनी वशिष्ठ
एम.टी.एस

बहुत कुछ मां तेरे साथ चला गया,
मेरा बचपन वो रूठना वो मनाना।
वो तेरी गोद में सिर रख कर सोना।।
तेरे बाद भी रूठे, न मनाया किसी ने,
तेरे जैसा प्यार न पाया किसी से।
याद आती है मां तू दरवाजे पे इंतजार करती,
अब कोई नहीं पूछता-बेटी इतनी देर कैसे हो गई?
न प्यार से जगाता है कोई,
न कहानियां सुना कर सुलाता है कोई।
उन प्यारे नामों से कोई नहीं बुलाता अब,
'मेरी लाडो' कहकर गले कोई नहीं लगाता अब।
तेरे जैसे नाज मां उठाता नहीं कोई अब,
हर डांट पे अपने पीछे छुपाता नहीं कोई अब।
अब रोते हैं तो आसूं गालों पे फैल जाते हैं,
तेरी तरह अपने आंचल से पोंछता नहीं कोई अब।
तेरे बाद मां अहसास हुआ
वही सुबहें, वही शामें हैं
वही सूरज, वही बारिश की फूहारे हैं।
अब भी पेड़ों पर कोयल गाती है,
पर मां तू बहुत याद आती है...

“मां है वो”

 ईना सोनी
सुपुत्री सोम नाथ सोनी

खुद जाग कर हमें सुलाएं,
खुद भूखे रहकर हमें खिलाएं
कोई और नहीं मां है वो।
डांट भी देती है वो,
फिर भी
उसमें भी प्यार छलकाती है वो,
लग जाए चोट मुझे कभी तो
दिल उसका घबराता है
कोई और नहीं मां है वो।
कभी चलती हुई डगमगा जाऊं,
तो सम्भाल लेती है वो
मुझ पर आये मुसीबत तो
ढाल बन जाती है वो।
कोई और नहीं मां है वो।

कार के करिश्मे

 एन. के. जुल्का
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(सेवा निवृत्त)

हृदय में एक उमंग थी, प्रबल इच्छा थी, स्वप्न था कि मेरे पास भी एक कार हो। हर आदमी का हृदय स्वप्नों से भरा पड़ा है और सभी स्वप्न कभी साकार नहीं होते। यदि जीवन में स्वप्न न हो तो जीवन की गति रुक जाएगी। जीवन नीरस हो जाएगा। जिस चीज को प्राप्त करने के लिए दौड़-धूप कर रहे हैं वही जीवन स्थिर सा नजर आने लगेगा। हरिवंशराय बच्चन के अनुसार—

“कौन कहता है कि स्वप्नों को न आने दो हृदय में, देखते सब हैं इन्हें अपनी उमर अपने समय में।” दूसरों की सेवा करने के बहुत से ढंग हैं किसी को ठीक मार्ग बताना, दुकान से सही चीज ठीक मूल्य पर पाने को कहना, एक अन्धे की लाठी पकड़कर उसे सड़क पार करवाना या अपनी कार में किसी असहाय व्यक्ति को लिफ्ट देना आदि। यह सब काम परोपकार के ही तो हैं। मैंने इसी इच्छा से एक कार ली ताकि जरूरतमंद लोगों के काम आ सकूं। उन्हें उनकी मंजिल तक पहुंचा सकूं। यदि किसी की सहायता की जाए तो बदले में शिष्टाचार के नाते वह थैंक—यू (धन्यवाद) कह दे तो मन को बहुत सन्तोष मिलता है, प्रसन्नता होती है। लेकिन कार में लिफ्ट लेने वाले लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। उनमें से कुछ वे हैं जिन्हें वास्तव में लिफ्ट की जरूरत है, क्योंकि उनकी बस निकल गई और जल्दी में है अपनी मंजिल या कार्यालय ठीक समय पर पहुंचना चाहते हैं। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो सिर्फ बस का किराया बचाने के लिए कार में लिफ्ट लेना चाहते हैं। कुछ लोगों के पास अपनी गाड़ी/कार है तब भी वह दूसरों की गाड़ी में सफर करना अच्छा समझते हैं। वह अनुभव करते हैं कि पेट्रोल (तेल) बचाकर शायद वह देश पर बड़ा उपकार कर रहे हैं वास्तव में ऐसा करने में उनका अपना पैसा बचाने का स्वार्थ है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो डरते हुए, झिझकते हुए लिफ्ट मांगते हैं। यह लोग वास्तव में लिफ्ट पाने के हकदार हैं।

मैं उन लोगों में से हूँ यदि कोई भी लिफ्ट मांगता है तो मैं उसे अपनी कार में लिफ्ट दूँ, परन्तु कई बार मैं लिफ्ट देते हुए स्वयं दुविधा में फँस गया। मुझे याद है कि एक बार कालेज की उस छात्रा, जो कनक छड़ी सी कामनी थी उसे मैंने अपनी कार में लिफ्ट दी। एक नौजवान, सुदृढ़ शरीर वाले लड़के को शायद मेरी यह बात पसन्द नहीं आई और वह अपने दोपहिया (स्कूटर) पर हमारे पीछे हो लिया और कार के आगे उसने अपना स्कूटर खड़ा कर दिया। मुझे उसने आश्चर्यजनक स्थिति में डाल दिया। अपनी गर्ल-फ्रेंड को कार से निकाल कर उसे अपने स्कूटर पर बैठाकर फरार हो गया। मैंने फिर एक बार एक सुंदर नवयुवती को कहा आओ मेरी गाड़ी में बैठो तो उस ने मेरी तरफ घूर कर देखते हुए अपना हाथ पॉव की तरफ बढ़ाया और मैंने अपनी कार का एक्सेलेटर दबाया ओर तेजी से वहां से निकल पड़ा। उसके पश्चात् किसी भी कन्या/नारी को

लिफ्ट देने से पहले हजार बार सोचता। एक बार एक नवयुवक हाथ में ब्रीफकेस लिए सड़क के किनारे बस या किसी से लिफ्ट लेने की प्रतीक्षा में खड़ा था मैंने उसे अपनी कार में बैठा तो लिया बाद में उसकी बातों से पता चला कि वह तो एक स्मगलर है। थोड़ी दूर जाकर मैंने गाड़ी रोकी और कहा पेट्रोल खत्म हो गया, कृपया उतर जाएं और इस तरह मैंने जान बचाई। मेरे पड़ोस में एक परिवार अपने बच्चे को स्कूल-बस में स्कूल भेजा करते थे। एक दिन उन्होंने अपने बच्चे को मुझे अपनी कार में स्कूल छोड़ने को कहा। उस दिन के बाद उन्होंने बच्चे को स्कूल बस में भेजना ही बन्द कर दिया और कहने लगे कि उनका बच्चा आपकी कार में ज्यादा सुरक्षित है पर मेरे लिए यह समस्या बन गई। कई बार मैं ड्राइविंग करना भी नहीं चाहता था तो भी मुझे पड़ोसियों के बच्चे को स्कूल छोड़ने के लिए कार चलानी पड़ती थी।

एक दिन मैं कार में जा रहा था तो अचानक दौड़ता हुआ एक व्यक्ति अपने घर से निकला और गाड़ी रोकने के लिए संकेत दिया। मैंने गाड़ी रोकी कहने लगा जरा रुकें थोड़ी देर में वह अपने घर के पाँच सदस्यों को साथ लाया और सभी मेरी गाड़ी में घुस गए। कभी-कभी किसी अजनबी को लिफ्ट देने का मतलब है अपनी जान को जोखिम में डालना। पड़ोस के राज्य से आये हुए चार सैलानियों को मैंने कार में बैठा तो लिया थोड़ी दूर जाकर, अन्धेरे का फायदा उठाकर उन्होंने चाकू की नोक पर मेरे से मेरी कार छीन ली और मैं पैदल घर को गया तथा दूसरे दिन मुझे अपनी गाड़ी विराने में मिली। एक दिन सुबह चार बजे जब मैं घर से जा रहा था तो मैंने एक वृद्ध को जल्दी-जल्दी चलते हुए देखा तो मेरा दिल पिघल गया। मैंने गाड़ी रोकी तथा उन्हीं लिफ्ट के लिए ऑफर दी तो वह बर्जुग बाले "नो-थैंक्यू" मैं तो प्रातः सैर करने निकला हूँ। बूढ़ा हूँ नींद नहीं आती इसलिए रात को ही प्रायः भ्रमण के लिए निकल पड़ता हूँ।

मैंने भी कई बार दूसरों से लिफ्ट मांगी, परन्तु मुझे किसी ने भी अपनी कार में न बैठाया। तब मैंने अनुभव किया कि ज्यादा लिहाजी तबीयत भी ठीक नहीं होती इसलिए मैंने अपने आप को बदलना शुरू किया और इतना बदला कि मैंने कार ही बेच डाली। न रहे बांस न बजे बांसुरी।

गज़ल



समता खानचंदानी
(कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक)

न उसने पूछा, न बताने की बात हुई
एक राज़ खुलते - खुलते रह गया
जी की तबीयत बस सम्हलने वाली थी
वो मेरी खैरियत पूछते - पूछते रह गया
नजरे उठी, उठाकर झुका दी गई
एक छोटा सा किस्सा बनते - बनते रह गया
उस एक शाख पर फिर फूल खिलने वाला था
उस पे बादल बरसते -बरसते रह गया
अचानक भीड़ ने रूख मोड़ दिया
परिंदा दाना चुगते - चुगते रह गया
सवाल सारे के सारे सवाल रह गए
ये मलाल जाते -जाते रह गया
गली के मोड़ पर मुड़कर पलट गया
वो शख्स आते-आते रह गया।

सफर

 विजय लक्ष्मी
सहायक लेखा अधिकारी

पहाड़ों से उतरकर
बहती ही जा रही है
कलकल करती हुई
मार्ग की बाधाओं को
चीरती हुई।
मन ही मन हर्षित
उल्लसित है, यह नदी...
उसका मन तो
सपने देख रहा है
अपने प्रियतम के,
जिससे मिलने को
आतुर है वो,
जब मंजिल तक
पहुँचने की चाह हो
तो मार्ग के अवरोध
चाहे कितने भी दुश्वार हो,
प्रबल इच्छा के समक्ष
घुटने टेक ही देते हैं,
रास्ते में, यह नदी
ऊसर भूमि को

उर्वरा करती हुई
पहुँच ही जाती है
अपने प्रियतम
सागर के पास,
हो जाती है एकाकार
विलीन हो जाता है
नदी का अस्तित्व
सागर में।
मानव भी, जन्म लेते ही
चल देता है अपनी राह
जिन्दगी में अपने सत्कर्मों से
रोशन करता हुआ
संवारता हुआ सबका जीवन
अन्ततः पा लेता है अपनी मंजिल
मिल जाती है आत्मा
परमपिता परमात्मा में,
ज्योति विलय होती है
परम ज्योति में।
पूर्ण होता है
सफर जिन्दगी का!

बाढ़-बिहार की आम समस्या

अरूण कुमार
(डी०ई०ओ० 'बी')

ए०एम०जी०-1

बिहार में गंगा, गंडक, बागमती, कोसी, कमला व लखनदेई नदी समेत लगभग एक दर्जन नदियों में कमोबेश हर साल बाढ़ न चाहते हुए भी एक भयावह सपने की तरह आ ही जाती है। हर साल लगभग 16 से 20 जिलों में पचासों गांव बाढ़ की चपेट में आ कर पानी में डूब जाते हैं और हजारों लोग एक-दो महीनों के लिए घर से बेघर होकर सड़कों, रेलवे स्टेशनों के पास तंबू में रहने को मजबूर हो जाते हैं। उनके जान-माल का नुकसान तो होता ही है साथ ही ऐसा माहौल बन जाता है जैसे उनके जीवन ने जल समाधि ले ली हो। यह प्राकृतिक घटना उत्तर बिहार में एक आम बात है।

लेकिन सवाल यह है कि यहाँ हर साल बाढ़ क्यों आती है? क्या यह समस्या वर्तमान समस्या है या यह अति प्राचीन है और हमारे पुरखे भी इससे पीड़ित थे



बाढ़ का अर्थ है “उल्टी होना”, जब पानी जरूरत से ज्यादा जमा हो जाता है और उसकी निकासी नहीं हो पाती है तो वह अपने रास्ते से भटक कर बाढ़ का रूप धारण कर लेता है। वैसे बाढ़ भारत के कई हिस्सों व राज्यों में आती ही रहती है जैसे कि- बिहार, असम, महाराष्ट्र, केरल, तमिलनाडु, बंगाल इत्यादि। बाढ़ कई प्रकार की होती है जैसे-

1) धीमी बाढ़- जब नदी, तलाब, वर्षा का पानी धीरे-धीरे जमा हो कर

अपने किनारे से गांव या खेत में, सड़कों पर आने लगता है तो वह धीमी बाढ़ कहलाता है। यह कम खतरनाक होता है।

2) तेज बाढ़- जब नदी, तलाब का पानी वर्षा के कारण या पहाड़ों से निकलने वाले पानी के कारण किसी खास क्षेत्र में जमा होने लगता है और बहुत बड़े क्षेत्र में फैल जाता है तो वह तेज बाढ़ की श्रेणी में आता है। इससे फसलों को ज्यादा नुकसान होता है, भारत के अधिकांश क्षेत्रों में ऐसे ही बाढ़ आते हैं।

3) अचानक बाढ़- यह बाढ़ का सबसे भयानक व तेज नुकसान करने वाला प्रकार है। जब अचानक बिना किसी पूर्व सूचना के किसी तटबंध या बांध के टूटने पर पानी का एक तीव्र सैलाब आता है या बादल फटने पर या पहाड़ों पर जमा बर्फ या पानी का अचानक ही नीचे गिरने पर इस तरह के बाढ़ की समस्या आती है जो क्षणिक

होती है परन्तु क्षण भर में ही यह बहुत भारी नुकसान कर देता है। ऐसी बाढ़ साधारणतया पहाड़ी क्षेत्र में देखी जाती है।

बाढ़ के आने के कई प्राकृतिक कारण हैं जिनमें प्रमुख हैं अधिक वर्षा का होना, तटीय क्षेत्रों में सुनामी और पहाड़ों पर जमी बर्फ का पिघलना।

उत्तर बिहार में 73 प्रतिशत हिस्सा बाढ़ से प्रभावित है। आंकड़े निम्न प्रकार हैं

राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्र 94.16 लाख हेक्टेयर	यह आंकड़ें यह दर्शाते हैं कि हम जितना विकास कर रहे हैं उतनी ही बाढ़ की समस्या भी बढ़ रही है, जो हमारे कार्यप्रणाली व विज्ञान पर संदेह पैदा करती है।
1952 में कुल बाढ़ प्रभावित क्षेत्र 25 लाख हेक्टेयर	
2020 में कुल बाढ़ प्रभावित क्षेत्र 68.8 लाख हेक्टेयर	
1947 में तटबंधों की कुल लम्बाई 160 किमी	
2020 में तटबंधों की कुल लम्बाई 3800 किमी	

कुछ वरिष्ठ अभियंता, वैज्ञानिक, समाजसेवी लोगों का कहना है कि “कभी तैरने वाला समाज आज डूब रहा है”। बिहार में बाढ़ को हमेशा के लिए खत्म नहीं किया जा सकता क्योंकि बाढ़ प्राकृतिक है परन्तु इसके प्रभाव को कुछ उपायों के द्वारा कम किया जा सकता है। हिमालय की तराई में बसे होने के कारण यहां हिमालय से निकलने वाले पानी का बहाव तेज होता है साथ ही पानी अपने साथ छोटे-बड़े पत्थर, रेत व बड़ी मात्रा में तलछट या गाद भी नीचे लेकर आता है, जिससे नदी के तल में या किनारे पर जमा होने से जल का स्तर धीरे-धीरे बढ़ता जाता है जो समय के साथ बाढ़ का रूप ले लेता है।



बाढ़ से तो कई नुकसान होते हैं परन्तु उनमें से कुछ जीवन को ज्यादा प्रभावित करते हैं जैसे- जान-माल की हानि, फसलों की बर्बादी जिससे महंगाई बढ़ती है, घर-मकान का विनाश, बाढ़ के समय जलीय जीवों से खतरा, बाढ़ के बाद कीटों से तथा मृत जीवों से कई तरह के बिमारी के फैलने का खतरा जैसे- डेंगू, मलेरिया, पेचिश, प्लेग,

सर्पदंश से मौत इत्यादि।

बाढ़ से सिर्फ नुकसान ही नहीं है परन्तु कुछ फायदे भी हैं जैसे कि- बाढ़ द्वारा लाये गये गाद से खेत की मिट्टी उपजाऊ बनती है और फसल अच्छी होती है, नदी-तालाब के जल स्तर में सुधार, जलीय जीवों को उचित पोषण, मछली पालन व खेती में सुविधा।

बाढ़ के मुख्य कारण- शहरीकरण, वन का कटाव, बढ़ती जनसंख्या, पर्यावरण प्रदूषण (ग्लोबल वार्मिंग), सरकारी कार्यों में भ्रष्टाचार, तटबंधों को बनाते समय जल निकासी का अभाव, जल भंडारण व उपयोग में गुणवत्ता का अभाव, अनियंत्रित निर्माण कार्य, सूखे मौसम में लोगों के द्वारा फ्लडप्लेन में धारा के बीच में घरों का निर्माण, नौकरशाही व राजनीतिक लापरवाही, सुव्यवस्थित तरीके से बांध न बनना, नहर व नदी जोड़ का कार्य न होना इत्यादि।

उपर्युक्त कारणों से जब वर्षा या ग्लेशियर का पानी किसी क्षेत्र में आने लगता है या जमा होने लगता है तो उसे निकासी हेतु पर्याप्त जगह नहीं मिल पाती है और जल बाढ़ का रूप ले लेता है।

सामाधान- “फ्लड मिटिगेशन”-बाढ़ के दुष्प्रभाव को कम करना, समय-समय पर नदी के किनारे जहाँ-जहाँ रेत का जमाव है उसे साफ करना, बाँध बनाना तथा नहरों का निर्माण, जल जमाव को व्यवस्थित करना, पूर्ण विस्तृत क्षेत्र में पानी का विस्तार करना ताकि जल जमा होकर बाढ़ का रूप न ले, वैज्ञानिक व तकनीकी रूप से नदी को जोड़ना, नहरों को जोड़ना और जल के निकासी के लिए पर्याप्त निकासी तैयार करना, गांवों-शहरों के नालों को हमेशा साफ रखना ताकि वर्षा के जल की निकासी हो सके।



ऐसा हरगिज नहीं है कि बाढ़ या कोई भी आपदा सिर्फ सरकारी लापरवाही से ही आती है, इसके उत्थान में हम नागरिक भी बराबर के जिम्मेदार हैं क्योंकि हम अपने दायित्वों को स्वार्थवश भूल जाते हैं। इस तरह की सभी समस्या से बचने के लिए हमें अपनी नैतिक

जिम्मेदारियों तथा दायित्वों को पूर्ण करना चाहिए, सरकारी नियमों-सुझावों को मानना चाहिए, अपने गाँव-शहर को साफ-सुथरा व प्रदूषण मुक्त रखने का प्रयास करना चाहिए, सरकारी कार्यों के निष्पादन में सरकार का सहयोग करना चाहिए क्योंकि जब भी कोई आपदा आती है तो इसका सबसे ज्यादा भयावह प्रभाव हम, आम नागरिक के ऊपर ही आता है। अतः बचाव में सुरक्षा और सुरक्षा में बचाव के नियमों को न भूलकर हमें उसका पालन करना चाहिए और हर आपदा से मिलकर लड़ना चाहिए साथ ही सरकार को भी इन समस्याओं से निपटने के लिए उचित व स्थाई हल की खोज करनी चाहिए तभी हमारा व हमारे देश का विकास संभव है।

सुन लो अन्नदाता की पुकार



बिमल भारती
लेखापरीक्षक

अनुभाग-सामान्य क्षेत्र (वि.प्र.क)

पहले तुमने आदेश दिया, फिर उसका सर डंडों से फोड़ दिया
गलती इतनी थी बस उसकी कि, उसने अपने अधिकारों का भान किया
उखाड़ फेंको ऐसी मगरूर सरकार को जो न सुने
अन्नदाता की बेबसी और मजबूरी की पुकार
गूँज रही अन्नदाता की पुकार, अब सुनना होगा ऐ अन्यायी सरकार

हैरान हूँ परेशान हूँ दर बंदर ठोकर खाकर भी खड़ी रहने वाली चट्टान हूँ
हालातों से जो हार ना माने मैं वो इंसान हूँ हाँ, मैं किसान हूँ हाँ, मैं किसान हूँ
लोग तो झूठे हैं ही यहां, पर मौसम भी बेईमान हुआ
बेकार हुई सारी मेहनत, और बहुत नुकसान हुआ
कभी आ रही बाढ़, तो कभी सूखे की पड़ती मार
कैसा मचा ये हाहाकार, अन्नदाता की सुनो पुकार
बोझ जिम्मेवारियों का अकेला वही उठाता है
मिले न दो निवाले कभी तो वह भूखा भी सो जाता है
अगर किसान नहीं रहेगा, तो तुम भूखे मर जाओगे
बिना किसान के इस देश को तुम कैसा भविष्य दिखाओगे
भरे पेट जो सभी जनों का, माटी में फसल उगाता है
भारत माता का लाल वही अपना किसान कहलाता है
कुछ फांसी पर लटक चुके, और कुछ हो रहे अब तैयार
कैसा मचा ये हाहाकार अब तो सुन लो अन्नदाता की पुकार ।

धरती का भगवान - किसान

 सचिन कुमार
लेखापरीक्षक

अपना कलेजा चीरने देती है, उफ तक नहीं करती है धरती माता,
बाद में जाना कौन है हमारा विधाता, पहले जिस पर कदम रखा था वो थी हमारी धरती माता।

आज प्याज कि बढ़ती कीमत का एक नशा सा छा गया,
मगर कोई देखो तो, किसान का घर सड़क पर आ गया।

एक बच्चे के मुख से किसान को भगवान कहना, दिल को भा गया,
शायद कलयुग का ये भगवान, सड़क पर आ गया।

पत्थरों की मूरत को हर रोज पूजता है इन्सान, डॉक्टर और किसानों को भूल गया जो धरती पर होते हैं भगवान,
हर प्राणी की पेट की भूख को मिटा देता है किसान, ये मत भूल इन्सान कि धरती पर साक्षात भगवान है किसान।

पहले एक कमाता था, तो सब खाया करते थे,
एक दूसरे का साथ निभाया करते थे।

सुख-दुःख में काम आया करते थे,
मगर आज कमाते सब हैं, लेकिन एक साथ खाया नहीं करते।

जब पेट में अनाज जाता है, तो बहुत आनंद आता है,
फिर भी न जाने क्यों तू भगवान समान किसान को भूल जाता है।

अब वक्त रहते सबको जगाना होगा, और भगवान समान किसानों को उनका हक दिलाना होगा।

छोटी सी जिन्दगी



✍ सरदार रविन्दर सिंह
लेखापरीक्षक
राजस्व सैक्टर

छोटी सी है जिन्दगी
हर बात में खुश रहो..

जो चेहरा पास न हो,
उसकी आवाज में खुश रहो..

कोई रूठा हो आपसे,
उसके अंदाज में खुश रहो..

जो लौट के नहीं आने वाले,
उसकी याद में खुश रहो

कल किसने देखा है
अपने आज में खुश रहो।

क्या खोया क्या पाया ?



अनामिका शर्मा

जिंदगी की भाग दौड़ में अक्सर हम खुद को भूल जाते हैं। मैं अक्सर यह सवाल खुद से पूछती थी कि क्यों ऐसा होता है कि हमारे लिए भौतिक वादी चीजें इतनी ज्यादा जरूरी हो जाती हैं कि हम खुद को और रिश्तों को इनके आगे बहुत छोटा बना देते हैं। लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि इस सवाल का जवाब मुझे हॉस्पिटल में अपनी ड्यूटी के दौरान मिलेगा। हर साल की तरह इस साल भी हमारी ड्यूटी आई. जी. एम. सी. में लगी। हम सभी नर्सिंग स्टूडेंट्स अपनी ट्रेनिंग के लिए यहां आते थे। उस दिन मैं अपनी ड्यूटी सर्जरी वार्ड में दे रही थी। रोजाना की तरह मैं अपना काम कर रही थी जैसे ही, डॉक्टर—राउंड आया तो हम सभी स्टूडेंट नर्स उस राउंड में शामिल हो गईं। राउंड जैसे जैसे आगे बढ़ा एक पेशेंट की बारी आई उस पेशेंट का पैर सड़ चुका था। मेडिकल भाषा में इसे डायबिटिक फुट कहते हैं। डॉक्टर ने उस पेशेंट से पूछा कि तुम पहले अपना इलाज कराने क्यों नहीं आए अब तुम्हारा पैर इतना सड़ चुका है कि इसे काटने के अलावा कोई और रास्ता नहीं तो यह इन्फेक्शन तुम्हारी पूरी टांग में फैल जाएगा। यह सुनते ही उस पेशेंट की आंखों में आंसू बहने लगे और वह रोते-रोते कहने लगा कि सर मैं एक मजदूर हूँ और मुझ पर 6 लोगों का पेट पालने की जिम्मेदारी है, मुझे लगा यह छोटा सा इन्फेक्शन है, खुद ही ठीक हो जाएगा और इतनी सी चीज का इलाज कराने के लिए अगर मैं हॉस्पिटल आता तो मेरी एक दिन की दिहाड़ी का नुकसान हो जाएगा पर मुझे क्या मालूम था कि इतनी छोटी सी भूल का नुकसान मुझे अपने पैर से भरना पड़ेगा। उस व्यक्ति की बात सुनकर मुझे यह तो समझ आ गया कि हमारे देश में लोग अपनी सेहत के लिए बिल्कुल भी जागरूक नहीं हैं और कुछ लोग तो इतने गरीब हैं कि उनके लिए अपना काम छोड़ना मतलब एक दिन की रोटी छोड़ने के बराबर हैं, परंतु मैंने अपनी हॉस्पिटल की ड्यूटी के दौरान यह भी पाया कि जिन लोगों के पास इलाज का पैसा है वह लोग भी अपनी सेहत से खिलवाड़ करते हैं। हमारा शरीर किसी मशीन से कम नहीं है जैसे कि कोई भी मशीन खराब होने से पहले छोटे-छोटे इशारे देती हैं वैसे ही हमारा शरीर भी किसी भी बड़ी बीमारी का संकेत छोटे-छोटे इशारों से देता है। अक्सर हम इन इशारों को नजर अंदाज कर देते हैं और यह भूल कई बार हमें बहुत महंगी पड़ जाती है। इसका छोटा सा उदाहरण यह होगा कि हार्ट अटैक आने से पहले हमारा शरीर हमें बताने की कोशिश करता है कि कुछ गड़बड़ है जैसे कि बाई ओर छाती में दर्द होना बाई बाजू में दर्द होना, सांस लेने में दिक्कत होना, और घबराहट भी हो सकती है। परन्तु हम इन छोटी-छोटी चीजों को नजर अंदाज कर देते हैं और यह सोचते हैं कि अभी तो यह ठीक हो गया दोबारा हुई तो फिर हॉस्पिटल जाएंगे ऐसे करते करते बहुत देर हो जाती है। केवल इन चीजों में ही नहीं हम अपने खानपान में भी बहुत लापरवाही बरतते हैं। अगर किसी आम आदमी से पूछा जाए कि एक पौष्टिक भोजन क्या है वह यह उत्तर देगा कि दाल चावल, रोटी सब्जी पौष्टिक भोजन में आता है। ज्यादातर लोगों की डाइट में बहुत सी चीजों की कमी होती है जिसमें से प्रोटीन, फाइबर सबसे ज्यादा हैं

अक्सर यह कमी शाकाहारी भोजन में पाई जाती है शाकाहारी डाइट में हम आम जिंदगी में कार्बोहाइड्रेट ज्यादा खाते हैं चावल और रोटी कार्बोहाइड्रेट हैं और जो दालें और सब्जियां हम खाते हैं उसे हम इतना पका देते हैं कि उसकी सभी पौष्टिक खूबियाँ खत्म हो जाती हैं। अक्सर हमारी डाइट में फाइबर की भी बहुत कमी होती है जो हम सलाद और फलों से पूरा कर सकते हैं। डाक्टरों का मानना है की 3 सफेद चीजें जो की चीनी, मैदा और नमक हैं ज्यादा मात्रा में हमारे शरीर के लिए बहुत खराब हैं। हमारा शरीर एक मंदिर से कम नहीं है आप इसका जितना ख्याल रखेंगे यह उतनी ही देर तक आपका साथ देगा। एक अन्य चीज जो मैंने महसूस की है वह यह है कि जो लोग अंधविश्वास में ज्यादा मानते हैं वह हॉस्पिटल आने से पहले कई फर्जी बाबाओं के चक्कर काट चुके होते हैं जिसके कारण उनकी सेहत बद से बदतर हो गई होती है। फिर मेडिकल साइंस भी उनका साथ नहीं दे पाती। मैंने ऐसे कई लोग देखे हैं जो डॉक्टर से ज्यादा इन बाबाओं पर विश्वास करते हैं जो कि सरासर गलत हैं यह बाबा आपकी बीमारी का इलाज करने के लिए आपको एक पुंडिया देते हैं जो की ज्यादातर सांद्राभ या स्टेरॉयड होते हैं। यह स्टेरॉयड कुछ समय के लिए आपकी परेशानी दूर तो कर देते हैं पर लंबे समय तक इनका डाक्टर कि सलाह के बिना सेवन करने से यह हानिकारक साबित होते हैं, स्टेरॉयड से होने वाली हानियाँ कुछ इस प्रकार हैं:—

1. स्टेरॉयड का सेवन करने वाले लोगों का हृदय इसका सेवन न करने वालों को तुलना में कमजोर होता है।
2. एनाबोलिक स्टेरॉयड का लम्बे समय तक सेवन करने से कोरोनरी धमनी के रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। आमतौर पर स्टेरॉयड का सेवन करने वालों का दिल धमनी के साथ ठीक से तालमेल नहीं बैठा पाता और क्षमता कम होने के साथ दिल कम लचीला हो जाता है।
3. स्टेरॉयड का सेवन करने वालों की धमनियों में प्लेक (गंदगी या मैल) बढ़ जाता है।
4. स्टेरॉयड किडनी फेल होने, लीवर की क्षति, टेस्टिकल्स के सिकुड़ने के लिए भी जिम्मेदार हैं।

स्टेरॉयड के साइड इफेक्ट्स इसके सेवन को बंद करने के बाद भी कई वर्षों तक रह सकते हैं। कई बीमारियों के लिए स्टेरॉयड लेना आवश्यक होता है परंतु डॉक्टर की सलाह के बगैर नहीं लेना चाहिए। हमारे समाज में गरीबों की संख्या इतनी है कि वह चाहकर भी अपनी सेहत का ध्यान नहीं रख पाते। गरीबी के साथ-साथ सही शिक्षा का ना होना भी इस चीज का कारण है कि लोग अपनी सेहत को नजरअंदाज कर देते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि सबसे ज्यादा दूर तो हमें ऐसे लोगों से होना चाहिए जो डॉक्टर ना होने के बावजूद भी खुद को डॉक्टर समझते हैं। वह खुद ही बीमारी के लिए दवाई ले लेते हैं और दूसरों को भी यह दवाई लेने की शिक्षा देते हैं। जो की बहुत ही गलत है हर इंसान का शरीर अलग होता है और उसे जरूरी नहीं है कि एक ही तरीके से ठीक किया जाए। जब भी शरीर की बात आए तो हमें बिल्कुल भी लापरवाही नहीं करनी चाहिए क्योंकि अगर हमारी सेहत सही रहेगी तो फिर हम आगे काम भी कर सकते हैं। अगर शरीर ने ही साथ छोड़ दिया तो फिर किसी भी चीज का कोई फायदा नहीं होगा। आजकल की जिंदगी में इतनी भागदौड़ है कि हम कुछ कमाने के चक्कर में अपनी सेहत को दौंव पर लगा देते हैं और फिर खुद से यह सवाल पूछने लगते हैं कि हमने क्या खोया और क्या पाया ?

आसमां जीतने दो

संजीव कुमार
डी०ई०ओ०



चिर निरंतर,
दुनिया हमने देखी,
आशाओं पर उड़ते,
उन्मुक्त होते सपनों को,
अनंत उड़ने दो,
थोड़ा गिरकर,
चोट खाकर,
हमने उठना सिखा है,
उड़कर आसमान छूने दो,
न रहने दो बेड़िया,
न पग बंधन,
हौसलों को ऊपर उठने दो,
हमें आजाद उड़ने दो,
हमने देखा रंग,
देखी हमने जंग,
आत्मनिर्भर बन,
हमने दुनिया जीती है,
अब छोड़ों हमारी राहें,
हमें आसमां जीतने दो ।

एहसास—एक प्रेम-पत्र

 हेतराम जसपाल

व.ले.प.अ.

जिंदगी की राहों में हर प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुए, प्यार-मोहब्बत की दुनिया से बेखबर, पेट की आग की खातिर हर प्रकार की ठोकरे खाता हुआ, जीवन की रोजमर्रा की जद्दोजहद से लड़ता व जूझता, अपनी बेबसी व बदकिस्मत को कोसता और धिक्कारता जब मैं अपनी जिंदगी रूपी गाड़ी को एक रूकावट रहित रास्ते पर ला पाने में कुछ हदतक कामयाब हो गया, तब मैं तन्हाईयों के क्षणों में अपनी बीत चुकी जिंदगी का मन-ही-मन आकलन करने की कोशिश करता हूँ तब मुझे एहसास होता है कि मैं जिंदगी का एक ऐसा महत्वपूर्ण हिस्सा जिंदगी के सफर की उन अंधेरी गलियों से गुजरते हुए बहुत पीछे छोड़ आया हूँ या यूँ कहिए कि जिसके बिना जीने का अनुभव किये, बिना उसका व्यवहारिक एहसास किये गंवा चुका हूँ तब दिल में एक एहसास होता है कि कहीं कुछ अधूरा-अधूरा सा रह गया है। जिंदगी का वो हिस्सा जिसमें हर एक अपनी जिंदगी में कुछ बढ़ा कर गुजरने, किसी लक्ष्य को पाने के लिए मन में उमंग लिए सपने संजोता है और हंसी-खुशी, प्यार-मोहब्बत की सपन-सलोनी जिंदगी तलाशते हुए, हर झंझट से विमुक्त एक उन्मुक्त जीवन जीने की उत्कंठा दिल में पालते हुए उस लड़कपन समय को जीता है, वो हिस्सा मुझे जीना नसीब हुआ ही नहीं अर्थात् मेरी जिंदगी के अध्याय से विलुप्त हो चुका था। लेकिन उस मंजर या हिस्से को नजर-अंदाज करते हुए भी मैं अपनी इस गैर-मामूली सी कामयाबी या यूँ कहिए एक ऐसा मुकाम जहां से मेरी जिंदगी में पसरे अंधेरे से अब उजाले की ओर देखने के लिए मैं स्वयं को काबिल महसूस करने लगा हूँ। अब कुछ लगने लगा कि जिंदगी में कुछ नयेपन का उद्गम हो रहा है मन में उल्लास, उमंग सी थिरकने लगी है दिल में बेफिक्री और विश्वास सा भर गया हो जिंदगी के इस सूनेपन को पाटने के लिए नज़रे भी निःशंक अब किसी कांतकाया की तलाश में विचरने को आतुर होने लगी लेकिन फिर भी न जाने दिल के किसी कोने में एक हल्का सा दबा हुआ डर है जो मेरे कदमों में बेडियां डाल रहा है, इस दबे हुए डर के चलते मैं अभी भी अपने जीवन में किसी का साथ पाने के लिए, हमसफर या साथी बनाने के लिए बेझिझक दिल की बात कहने में संकोच महसूस करता हूँ क्योंकि जिस परिवेश से होकर मैं बड़ा हुआ हूँ, मैं आज भी उन्हीं चिथड़ों से लिपटी, पेट की आग बुझाने के लिए जद्दोजहद में फंसी अपनी जिंदगी को सीने में दबाए जीये जा रहा हूँ भला मुझ जैसे साधारण, गैर-मामूली इंसान की ओर कौन प्यार या अपनेपन भरा हाथ आगे बढ़ाएगा और साथी या हमसफर बनने को राजी हो पाएगा। बस यही डर जो मेरे भीतर घर कर गया है, इसके चलते मैं उच्च घराने व आधुनिकता से लबरेज कांतकाया से किस मुहं बात कर सकता हूँ।

कभी-कभी तो मेरा मन यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि क्यों गरीब पैदा होते हैं-क्यों समाज के अन्य लोग गरीबों को हेय और निम्नता की दृष्टि से देखते व्यवहार करते हैं? आखिर क्यों? वो भी तो इंसान है उनके सीने में भी वैसे ही दिल धड़कता है जैसा कि दूसरों के दिल में धड़कता है। धन-दौलत, शोहरत व सम्पन्नता में ऐसा क्या आकर्षण है कि समाज के सभी वर्ग एक सुर में उनके साथ बिना किसी कसौटी के साथ चलने में जरा सा भी सोच विचार तक नहीं करते। समाज में इस प्रकार छोटे-बड़े, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब की दीवारे क्यों हैं? और किस लिए हैं? जिंदगी के हर पहलू को धन-दौलत की ताकत के आधार पर क्यों मापा जाता है और क्यों खड़ी कर दी जाती है असमानता की दीवार इंसानों के मध्य? इस प्रकार के प्रश्न मेरे जहन में न जाने कितनी बार उमड़ते-धुमड़ते रहते हैं। इन प्रश्नों की कशमकश में मैं अपने आप को उलझा हुआ महसूस करता हूँ। कभी-कभी मन सोचता है, काश! मैं भी एक सम्पन्न परिवार में जन्मा होता मेरे जीवन में भी वो सब नसीब हुआ होता जिसके आधार पर सम्पन्न लोग प्यार-मोहब्बत के लम्हों को जी लेते हैं वैसे एहसास मैं भी महसूस कर पाता बेफिक्री की जिंदगी जी पाता, न जुझता पेट

की आग बुझाने की जद्दोजहद में और न ही संकीर्ण हुई सोच को अपने ऊपर हावी होने देता। इस प्रकार की तड़फन आज भी मेरे सीने में एक टीस बनकर चुभती सी है। वो शायद कभी न मिलती अगर मुझे भी वो सब प्राप्त हो पाता जो आज के समाज के लिए इंसान को सम्पन्नता व शोहरत प्रदान करता है। लेकिन नहीं ऐसा कुछ हो नहीं पाया और अब तो ऐसा हो पाना भी असम्भव है क्योंकि वक्त की गाड़ी बहुत आगे निकल चुकी है वो सारी खुशियां, वो सारे लम्हे जिनमें कुछ कर गुजरने की आग होती है चाहत रहती हैं प्यार-मोहब्बत की रंग-रंगीली दुनियां में विचरने, सपने संजाने और उनको जीने की एक ललक सी रहती है वो सभी अब इतिहास बन चुके थे मेरी जिंदगी के लिए। अब तो सिर्फ उन्हें यादों, कल्पनाओं में ही स्मरण में लाने की असफल कोशिश भर की जा सकती है क्योंकि हकीकत बहुत पीछे छूट चुकी है।

अंतर्द्वन्द्वता भरे ऐसे बहाव में बहकर कभी-कभी मेरा मन विक्षुब्ध सा होकर रह जाता है। ऐसे में किसे दोष दिया जा सकता है, यह तो मेरा ही प्रश्लब्ध है जो मुझसे मेरे जन्म के साथ ही जुड़ा हुआ है। कुछ क्षणभर के लिए इंसानों में ऐसी असमानता के लिए मैं सरकार को ही दोषी मानता हूं क्योंकि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी वो इंसानों के मध्य की असमानता को पाटने में नाकामयाब ही साबित हुई है। जो सिलसिला सदियों से चला आ रहा है समाज का वही ढांचा, वही ताना-बाना ज्यों का त्यों ही चलता चला जा रहा है। हरेक इंसान का स्थान वही है, अधिकार और कर्म वही है जो मनु समाज की एक शातिराना देन है अंतर सिर्फ इतना सा है कि आज इंसान अंग्रेजों की गुलामी की ज़ज्जीरों से मुक्त खुली हवा में सांस लेने के लिए अपने आपको आजाद महसूस कर सकता है। लेकिन समाज की परिपाटी उसी धूरी पर चल रही है वही आलम है वही स्थिति वही अमीर-गरीब की दीवार-अमीर, और अमीर बनता जा रहा है गरीब उसी पेट की आग के सम्मुख विवश है, लाचार है असहाय है। क्योंकि जो व्यवस्था अंग्रेजी हकूमत ने स्थापित कर रखी थी आजादी के बाद उसमें जरा सा भी परिवर्तन नहीं किया गया समाज का नये सिरे से जो निर्माण किया जाना चाहिए था, नहीं किया गया, जो जिस अवस्था में थे जिनके पास जो कुछ भी था, उन्हीं के पास ही रह गया। खैर! आजादी के इतने वर्षों के बाद भी समाज में पसरी ऐसी असमानता के परिवेश में मैं अपनी जिंदगी की तुलनात्मक दृष्टि से समीक्षा करने की कोशिश करता हूं तो मैं अपने आप को एक कशमकश की स्थिति में पाता हूं ऐसे ही विचारों के सिलसिले में कभी आँख लग जाया करती है, तो कभी किसी के आने की आहट से विचारों का क्रम टूट जाया करता।

ऐसे परिवेश से होते हुए आज जिस मुकाम या यूँ कहिए एक हल्की सी सुखद स्थिति में अपने आप को देखता हूँ तो ऐसे में कुछ क्षण सोचने के लिए मजबूर करने लगते हैं लेकिन समय भी यूँ अनुकूल तो नहीं है मगर फिर भी एक जिज्ञासा, एक छटपटाहट सी उमड़ पड़ी है मन में और नज़रों को भी भा सा गया था एक खूबसूरत सा चेहरा जिसे दिल-ही-दिल ने स्वीकार कर लिया था, हमराही-हमसफर के रूप में और चाहत की ऐसी भीनी-भीनी रंगत में रंगने को आतुर था तन-बदन जिसमें अपनापन मिश्रीत था, प्रेम की स्वर-लहरी गुंजने को व्याकुल थी। पहली बार सचमुच पहली बार एक अदभुत सी सिरहन कौंध उठी थी मेरे मन में, एक रूपहली सूरत सादे लिबास में लिपटी काले-कज़रारे नयनों वाली कांतकाया की मूरत ने दिल पर ऐसा जादू सा कर डाला था कि दिल में उसके प्रति अपार प्रेम व प्रशंसा भरे शब्द निकले बिना रह नहीं पाते—

**सादगी में समाई, एक बेमिसाल मूरत हो तुम
काले-पत्थर में छिपा हो जैसे, वो कोहिनूर हो तुम,
शब्दों की कमी लगती है, किन शब्दों से तारिफ करें
तारिफ से परे, बहुत परे, वो दूर हो तुम ।**

लेकिन यह उद्गार तो मेरी दिल की एक कोरी चाहत भर थे मेरी नज़रों का एक असफल निरीक्षण मात्र था जिसका अंजाम जो मिलना था, मिल गया मुझको।

सच कहूँ तो मैं उन हथकण्डों से बिल्कुल अंजान नावाकिफ था जिनको हथियार बना कोई किसी से प्रेम-मोहबत की पींगे बघारता है और सलीके से उसका इज़हार करने की नज़ाकत रखता है मैं तो केवल सपाट, अपने सीधे-सादे मर्यादा से बंधा हुआ मैं भला कहां उस तरह के हथकण्डो को अपना सकता? बिल्कुल भी नहीं। मैं केवल मात्र इज़हार के दो शब्द के आगे बढ़ नहीं सका और आप आपको भला मैं क्या कह सकता हूँ, आप तो मेरे लिए, मेरी जिंदगी के लिए

क्या हो यह तो केवल मैं ही जान सकता हूँ। आप एक ऐसी प्रेरणा बनकर मेरे दिल में समा गई थी जिसने दशकों से मेरे दिल में दफ़न प्यार की लौ को जला दी थी मेरी विरान सी जिंदगी में एक नई बहार सी आ गई थी दिल में एक मीठी सी सिहरन जागृत हो गई थी एक अदभुत सी तड़पन कौन्धने लगी थी जैसे मानो एक मुरझाई हुई डाली में किसी ने अचानक पानी सींचकर उसकी बेजान पड़ी पखुडियों में एक नई जान सी भर दी हो और ये दिल भी चंचल पंखेरू की भांति ऊंची-ऊंची उड़ान मारने के लिए आतुर होने लगा था। ऐसे में अब समझ आने लगा था कि पेट की आग की जद्दोजहद से विमुक्त इंसान की जिंदगी कितनी सुहानी, भयरहित और आशावादी होती है, जिसको कि आप जैसे भाग्यशाली लोग बेफिक्री से जीते हैं। लेकिन यह इतना क्षणिक था कि समझने-सम्भलने का वक्त ही न मिल पाया। जिसका अब केवल एहसास मात्र ही रह गया मेरे दिल में।

खैर! जो हुआ अच्छा ही हुआ। क्योंकि यह तो केवल मेरे निजी जज्बातों का एकतरफा बहाव था जो न जाने कहां से आंधी के एक झोंके की तरह आया और बहाकर ले गया मुझको एक ऐसे पड़ाव की ओर जहां मेरे मन-मस्तिष्क की ग्रंथियों को शिथिल सा कर गया केवल और केवल एक खूबसूरत चेहरे के सिवा कुछ देखने कुछ समझने के सिवाए मुझे शक्तिहीन कर गया। क्यों हो गया यह सब कहां भूल हो गई मुझसे समाज में सदियों से चली आ रही परम्पराओं, रीति-रिवाजों, ऊंच-नीच, छोटे-बड़े के भेदभाव की मटमैली चादर की छाया को क्यों भूल गया और क्यों इसे देखने व परखने की मुझसे नज़रअंदाजी हो गई। क्या था मेरे पास! जिसके बूते मैंने यह कदम उठा लिया और कर बैठा प्रेम एक ऐसे अंजान से जिसको भेंट करने के लिए नहीं था कुछ मेरे पास, अगर था, तो बस इतना कि दिल बेहद चाहत से लबरेज था उसकी सादगी, मनमोहक सी छवी के लिए। मैं तो समाज की मान-मर्यादाओं से बेखबर सलीके-रूतबों से अंजान-अनभिज्ञ बेहुदगी की सीमाओं को लांघता हुआ, कहां एक सजग इंसान का जज्बा था मुझमें नहीं बिल्कुल भी नहीं था। क्योंकि अभी-अभी तो एक गर्द भरी जिंदगी से बाहर निकल कर आया था भला सामाजिक मान-मर्यादाओं से कहां वाकिफ हो सकता था मैं। मैं तो भूल चुका था समाज में पसरे इंसान-इंसान के मध्य अंतर को ऐसे में भला आप की सजग दुनियां में मेरा कैसे मेल हो सकता था?

कहां आप? और कहां मैं? जज्बातों और सलीको की मल्लिका सामाजिक रूतबे से लवरेज मान-मर्यादाओं की मनीषी उचित-अनुचित को समझने-परखने वाली सगुण-सम्पन्न कहां मेल हो सकता था, नहीं बिल्कुल भी नहीं। परन्तु एक बात जिसने मुझे सदैव के लिए आपका ऋणी बना डाला वो यह कि मैं क्या हूँ? कौन हूँ? कहां खड़ा हूँ? किस समाज में हूँ? यह सब मुझे आपके चंद दिनों के व्यवहार से और अकारण आपकी सादगी, आपके चंचलपन पर आपकी ओर आकृष्टता के परिणाम से पता चल गया अब मैं जान गया कि मुझे क्या करना चाहिए।

मैं तो मात्र दिशाविहीन एक दिशा की तलाश में इधर-उधर भटकने लगा था परन्तु अब मुझे अपनी सही दिशा का ज्ञान आपने प्रदान कर दिया। इसके लिए चाहत तो आपके नेक विचारों की थी मगर वो भी मेरे नसीब में भला कहां है? आपके विचारों से न सही आपके रूख ने, आपके व्यवहार के अन्य तरीकों ने सब समझा दिया मैं अब कुछ नया सीखने की ओर ध्यान दूंगा अंजान जो हूँ मैं क्योंकि समाज के विस्तृत परिप्रेक्ष्य को मैं अभी भी समझ नहीं पाया हूँ। कभी किसी बात को कोई इंसान सहजता से समझ जाता है तो कभी-कभी उसी को समझने में दशक बीत जाया करते हैं। यह तो इंसान-इंसान पर निर्भर करता है, उसकी निजी सोच की सीमा के दायरे पर निर्भर करता है मेरी सोच का दायरा शायद इतना ही है तभी तो एक और गलती/नासमझी करने जा रहा हूँ कि मैं आपको यह आखरी खत लिखने से अपने आप को रोक पाने में असमर्थ सा महसूस कर रहा हूँ हो सके तो मुझे आखरी बार माफ़ कर देना इस पत्र के माध्यम से यह सब मामूली से शब्द जो आपके नजरिये से केवल मात्र कूड़ेदान के पात्र होंगे- फिर भी लिख रहा हूँ निवेदन बस इतना सा है कि इन्हे पढ़ जरूर लेना ताकि मेरे दिल का बोझ कुछ हल्का हो सके और मैं एक सुकून भरी सांस ले सकूँ। वैसे सपने तो इंसान की जिंदगी में एक तरह के आशा की उड़ान भरने के लिए पंखेरू की भांति होते हैं, उड़ान भरना इनका काम

होता है, मंजिल मिले या न मिले, कहां परवाह होती है इन्हें और हश्र वही होता है जो मेरा हुआ मैं भी उड़ना चाह रहा था इन सपनों के सहारे परन्तु सम्भलना मुझे आ न सका और लड़खड़ा गया बीच रास्ते में क्योंकि इनके वशीभूत भूल गया था मैं के सपने तो आखिर सपने होते हैं वास्तविकता से कहां इनका कोई वास्ता हो सकता है इसलिए अब मन सोचता है कि यह सब क्या हो गया कैसे हो गया क्यों मैं यूँ ही सपनों के मोहपाश में फिसलकर इनके आगोश में अपने आप को जाने से रोक नहीं पाया यह सब अब ठीक से याद भी नहीं क्योंकि इनका बहाव इतना लुभावना व भावनात्मक सा था कि जिसके सम्मुख मेरी सारी भावनाएं अजिज हो कर रह गई और मैं इनके मोहपाश में बहता हुआ एक ऐसे अंचल की तरफ बढ़ गया जहां तड़पन के सिवाए और कुछ नहीं हो सकता खासकर मुझ जैसे मामूली से इंसान के लिए अगर कुछ है तो बस एक आशंकित सा प्रश्न और उसका कटूक एहसास जिसको सीने में लिये तय कर लूंगा जिंदगी का अपना बाकी सफर कुछ इस तरह..... ।।

मैं यूँ ही भावनाओं में बहकर
यह निर्णय कर बैठा,
आपके 'अक्स' की मुस्कूराहट मात्र को
मैं 'हां' का लिवास ओढ़ा बैठा।

मेरी ही नज़रों ने आज
मुझी से ही धोखा कर दिया
जिस ओर जा रहा था मैं संभल-2 कर
उस ओर से मुझे हताश कर दिया।

आपके दिल में न झांककर
आपके चेहरे को ही सही मान लिया
यही गलती कर दी मैंने
आपके दिल के इंकार को न समझ सका
और आपको अपना मान लिया।

भूल गया था मैं सब कुछ
आपकी मुस्कूराहट को देखकर
इसी के इतने पास इंकार भी है
मुझको आपसे दूर करने वाली
बीच में कोई 'दीवार' भी है ?

दीवार क्या है ?
यही प्रश्न 'एहसास' बनकर
रह गया मेरे जहन में,
इसे सुलझाने में नहीं
भुलाने में समय गुजार लूंगा बाकी।

रात का जादू

 प्रभात कुमार
(सहायक पर्यवेक्षक)
प्रशासन अनुभाग

याद नहीं कब आएगी यामिनी तिमिर
कब आएगी रतिया-शिशिर
गीली करने रीतियां,
याद करके प्रियतमा।

मौन रात्रि सहयात्री,
कहना न मुझे कुछ -न वो सुनना चाहती।

मौन जलधारा सा संगीत सुनाती,
निजी पलों को सुनहरा बनाती।
उखड़ती जिंदगी में सांसे डालती,
और शिथिल नसे शांति पाती।

याद नहीं कोई ऐसा मिला हो,
जो ऐसा सहारा बना हो।
कई बार रोया हूं तुमसे छिपके,
नहीं कभी तुम्हारे सामने।

बरस जाओ मुझपर त्यों,
बरसती हो घनघोर वर्षा ज्यों।
घन का आवरण ढक, कर दो मुझे सराबोर
आएगी नई उमंगे, नए त्योहार।

खुली आंखों के ख्वाब



अनामिका शर्मा

उस दिन राजू अपने कमरे में अकेला बैठा था। उसके चेहरे पर अशान्ति और हताशा साफ झलक रही थी। वह अपना घर-बार छोड़ कर गांव से शहर अपना सपना पूरा करने आया था पर उसे अपनी मंजिल असंभव नजर आ रही थी। वह अखिल भारतीय सेवा में प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहता था परन्तु 03 साल की कड़ी मेहनत के बाद भी आज वह परीक्षा में पास नहीं हो पाया। उसकी उम्र के सभी लड़के नौकरी करके एक आरामदायक जीवन व्यतीत कर रहे थे। अब उसे अपनी गरीबी चुभने लगी थी। शर्म और अफसोस के गहरे सागर में वह डूबता जा रहा था और तभी उसने निर्णय लिया कि वह भी नौकरी करेगा। उसने एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में नौकरी में लिए आवेदन दिया और साक्षात्कार के बाद उसे नौकरी मिल गई। वह बहुत खुश था। कम्पनी में पद संभालने से पहले उसे माता-पिता का आशीर्वाद लेने का ख्याल आया और वह उसी रात ट्रेन से गांव की ओर रवाना हो गया। घर पहुंचते ही राजू ने माता-पिता के पैर छुए और माँ को मिठाई का डिब्बा देते हुए खुशखबरी सुनाई परन्तु पिता के चेहरे पर निराशा की शिकन देख कर उसका मन बैठ गया और वह बोला, पिता जी क्या आप खुश नहीं हैं। मैं एक बहुराष्ट्रीय बड़ी कम्पनी में नौकरी करने जा रहा हूँ। सैलरी भी अच्छी है। अब हमें गरीबी में नहीं रहना पड़ेगा।

राजू के पिता मुस्कराए और बोले, 'मेरे साथ चलो'। राजू को यह बात समझ नहीं आई पर वह पिता जी के पीछे-पीछे चल दिया। वह पूरे रास्ते चुप रहे। राजू को यह चुप्पी खाए जा रही थी। एक एकांत जगह आते ही पिता वहां लगे बेंच पर बैठ गए और राजू को सांथ बैठने का इशारा किया। वह चुपचाप थोड़ी दूरी पर बैठ गया। पिता जी बोले 'राजू आज मैं जो कहानी तुम्हें सुनाऊंगा उसे ध्यान से सुनना और फिर मुझे अपना निर्णय बताना'। राजू ने अपना सिर हिलाकर हॉमी भरी। पिताजी ने आगे कहा 'एक बार दक्षिण भारत के एक गाँव में एक बच्चा रहता था। वह बहुत गरीब परिवार से था। उसके पिता नाविक थे उनका बड़ा परिवार एक छोटे से घर में रहता था। वह बच्चा बहुत विनम्र और जिज्ञासु था। सुबह 4 बजे उठकर अखबार बेचता, फिर स्कूल जाता, फिर आकर घर पर माँ की मदद करना और खेलना-कूदना उसकी दिनचर्या का हिस्सा थे। वह जैसे ही बड़ा हुआ उसे अपना गाँव अपनी आकांक्षाओं के

सामने छोटा लगने लगा और उसने दूसरी शहर में शिक्षा लेने का निर्णय लिया। जो परिवार इतना गरीब था वह परिवार बड़े-बड़े कालेजों की फीस कहीं से जुटाता। परन्तु वे इस बच्चे का वैज्ञानिक बनने का सपना कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद पूरा करना चाहते थे। उसकी बहन ने अपने शादी के गहने बेच कर कॉलेज की फीस भरी। कॉलेज पूरा करने के बाद वह सेना में वैज्ञानिक बनना चाहता था वह अपना जीवन देश की सेवा में बिताना चाहता था। परन्तु वह भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाने के लिए अपना साक्षात्कार पास नहीं कर पाया। वह बहुत हताश हो गया। वह अपने जीवन में लिए सभी निर्णयों के बारे में फिर से सोचने लगा परन्तु उसने आशा नहीं छोड़ी और एक कम्पनी में वैज्ञानिक के पद पर नौकरी करने लगा। जीवन भर उसने कई बड़े कार्य किए जिसके लिए उसे पूरा देश जानने लगा। जहां एक ओर वह लड़का सेना में ऑफिसर बनना चाहता था वह अब पूरी आर्मी का सर्वोच्च कमांडर बन गया था वह देश के सबसे उँचे पद पर बैठा। वह बच्चा और कोई नहीं बल्कि भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति डा० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम थे। वह पूरी दुनिया में 'मिसाइल मैन' के नाम से जाने जाने लगे' पिता जी की यह बात राजू बड़े ध्यान से सुन रहा था। पिता जी आगे बोले 'बेटा सपना छोटा हो या बड़ा वह जरूर पूरा होता है अगर आप उसके पीछे निस्वार्थ भावना से लग जाओ। मैं तुम्हारा पिता तुम्हें बहुत अच्छे से जानता हूँ, तुमने पढ़ाई छोड़ने का फैसला सिर्फ असफलता के भय से लिया है। अगर अभी भी तुम्हें लगता है कि तुम्हारा निर्णय ठीक है तो मैं तुम्हारे साथ हूँ'। पिताजी की यह बात सुनकर राजू की आंखों में आंसू आ गए वह गाँव तो माता पिता का नौकरी के लिए आशीर्वाद लेने आया था परन्तु जा इस दृढ़ निश्चय के साथ रहा था की वह अब अखिल भारतीय सेवा में प्रशासनिक अधिकारी बनकर ही लौटेगा। उसने शहर जाकर फिर से कड़ी मेहनत शुरू कर दी परन्तु इस बार उसे असफलता का भय नहीं था। सच्चे मन से मेहनत करने के एक साल बाद उसने अपनी परीक्षा पास कर ली। अब वह सिर्फ राजू यादव नहीं था अब वह ऑफिसर राजू यादव बन गया था।

कोशिश कर



शैली भाटिया

कोशिश कर कुछ मिलेगा, आज नहीं तो कल मिलेगा
बड़ा कदम मंजिल नहीं तो तजुर्बा मिलेगा
नहीं जाती मेहनत बेकार कोशिश करने करने वाले की
मिल ही जाती है मंजिल हौसंला रखने वालो को
कोशिश कर कुछ मिलेगा, आज नहीं तो कल मिलेगा
पथ पर चलना सीखेगा, पथ पर चलने से पथ का अनुभव होगा
मंजिल ही ना सही सफर का मज़ा होगा
कोशिश कर कुछ मिलेगा, आज नहीं तो कल मिलेगा
अर्जुन के तीर सा साथ, मरूस्थल से भी जल निकलेगा
मेहनत कर पौधों को पानी दे, बंजर जमीन से भी जल निकलेगा
कोशिश कर कुछ मिलेगा, आज नहीं तो कल मिलेगा
कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की,
जो है आज अंधेरा कल उजाला भी होगा
हार कर क्यों बैठा है तू, हारना तेरी फितरत में नहीं
जिन्दा रख हौंसला तू, हौसलों से कुछ मिलेगा
कोशिश कर कुछ मिलेगा, आज नहीं तो कल मिलेगा।

हिन्दी पखवाड़ा वर्ष 2020



हिन्दी पत्रिका 'हिम-प्रभा' के प्रथम ई-संस्करण का विमोचन



हिन्दी पखवाड़े वर्ष 2020 के पुरस्कार वितरण की कुछ झलकियां



जिंदगी



दुर्गेश नैय्यर
व.ले.अ.

आंधी-तूफान, कभी सूखे, तो कभी बारिश
की जद में रहती है,
हर एक दिन की दुश्चारी
जिंदगी अपनी ही रौ में बहती है...

क्रदम सम्भलने ही नहीं पाते
रास्ते बनते, मिटते हैं
ठिठकती, गिरती- पड़ती, रेंगती
जिन्दगी अपनी ही दौड़ में रहती है

कभी हजारों की भीड़ में अपनी जगह तलाशती
कभी अकेलेपन की परछाई से लड़ती है
सोचती.. मुस्कुराती, बात करती
जिन्दगी रोज नए दायरों में होती है

देखती सबको टुक-टुक.. सुनती- समझती
हर मंजर में भरती मर्जी के रंग
सोचती कुछ और करती कुछ और
जिन्दगी अपने ही ढंग में रहती है !!

तीन लघु कहानियां



समता खानचंदानी
(कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक)

1. एक (डर)

चाँद तन्हा है ... रात तन्हा दिल मिला कहाँ-कहाँ तन्हा

फिर वही पंक्तियां दिमाग और दिल में जगह बनाने लगी | न मालूम कितनी दफे आज कल ये पंक्तियां याद आ जाती हैं | शायद मीना कुमारी को भी ये मालूम न होगा कि उनका लिखा जिंदगी में घर कर लेगा |

रुचि भीड़-भाड़ से हमेशा कतराती थी | फंसी-फंसी जगहे उसे अजीब से डर से भर देती है | घर के बाहर वाले कोई भी काम उसने कभी नहीं किये चाहे आदित्य से घंटे भर डांट ही क्यों न सुननी पड़ी हो | घर के बाहर के सभी काम आदित्य, रुचि के पति ही निपटाते थे | और अब....

रुचि आजकल खुद से बातें करने लगी है | विकल्प भी दूसरा और कोई नहीं है | ये महामारी का दौर है जिसकी एक ही दवा है – तन्हाई | सारा मीडिया कोविड से हुई मौतों के आंकड़ों को कवर करने में जुटा हुआ है | जिन घरों में लोग बीमारी की चपेट में आ गए हैं और अस्पताल में भर्ती हैं उनका इन आंकड़ों और खबरों से क्या हाल होता होगा ये कोई नहीं सोच रहा | क्या हम इतने संवेदनहीन समाज में रह रहे थे ?

1 बजने में बस 10 मिनट बचे हैं | सरकार ने सुबह 9 से 1 बजे तक छूट का समय दिया हुआ है.. ताकि रोजमर्रा के ज़रूरी सामानों की खरीद की जा सके | सब्जियों का पार्सल मुहय्या करवाया जा रहा है मगर पार्सल में अक्सर वो ही बंद है जिनसे बच्चे दूर भागते हैं जैसे बैगन.. घीया.. करेला.. | विनी, रुचि का 6 साल का बेटा इनमें से कुछ नहीं खाता, उसकी रोनी सूरत याद करते ही रुचि की आँखों में आंसू भर आए |

रुचि जब घर पहुंची, ढाई बज चुका था और उसका बेटा विनी रो- रो कर सो चुका था | पुचकारने मनाने का समय भी कहाँ था ? बर्तन.. कपड़े.. झाड़ू... पौछा.. और फिर खाना बनाना | उसके ज़हन में एक और शब्द कौंधा- आत्म-निर्भर भारत | उसे अहसास हुआ कि कितनी बैसाखियाँ थामे थी अब तक.. और टूटी तो सारी एक साथ | जिंदगी जब खुद सिखाने पर आती है तो वह हर चुनौती कठिन कर देती है... आदित्य को हॉस्पिटल में भर्ती हुए आज एक हफ्ता हो गया है | रुचि आदित्य पर इतनी निर्भर हो चुकी थी की साधारण से बाहर के काम भी उसे बहुत मुश्किल लगते हैं | 'इंडिपेंडेंट वुमन' का नारा लगता समाज कितना दोगला जान पड़ता है आज ... अपनी पसंद की लिपस्टिक और साड़ी के नाम पर तलाक की चौखट तक पहुंचने वाले सास- बहू के टीवी सीरिअल क्या ये दिखाते हैं कि किसी व्यक्ति की मात्र मौजूदगी कितनी ताकत.. कितनी ऊर्जा से भर देती है | कोरोना काल रोज नए सबक सिखाता सा जान

पड़ता है रुचि को ...और ये जो खबरें हैं.. न जीता छोड़ रही है न मरता| क्या आदित्य घर लौट कर आ पायेगा.. कोरोना को हरा पाएगा... या फिर रुचि को ये जीवन एकांकी ही बिताना पड़ेगा?

2. दो (ब्रेकिंग न्यूज़- 2020)

अपने कैमरामैन रमेश के साथ अपने ऑफिस के सामने खड़े अभिनव गोस्वामी सोच रहे थे की जब सारी दुनिया चीत्कार रही हो, एक पत्रकार का धर्म क्या होना चाहिए? पेज श्री पर चटपटी खबरे पढ़ने वाला समाज आज वैश्विक आंकड़ों पर नज़र गड़ाए बैठा है .. आंकड़े- मृत्यु के.. और यहाँ दूसरी ओर पत्रकारों के सामने चुनौती है ब्रेकिंग न्यूज़ की।

अभिनव गोस्वामी शहर के स्थानीय टीवी चैनल में पत्रकार है और उन्हें कोरोना की खबरों को कवर करना है क्योंकि और कोई दूसरी खबर इन दिनों सुर्खियों में नहीं है | देश में लॉकडाउन लगे आज दसवां दिन है | मजदूर वर्ग के लोगों का पलायन जारी है | लोग भूखे, प्यासे पैदल बस चले जा रहे हैं.. ये अपने गंतव्य तक पहुँच भी पाएंगे?

ओ भई... इतना छोटा बच्चा लिए कहा जा रहे हो?-

एक औरत, एक आदमी और साथ में करीब साल भर का बच्चा सड़क पर देख कर अभिनव को अचानक एक और कहानी अपने चैनल के लिए मिल गई।

साब अपने घर को जा रए .. घरवाली के रई मरनाइ हे तो आपणी माटी में मरे |

अरे माटी तक पहुंचोगे कैसे भाई! ये आपका बच्चा तो वहां पहुँचने के पहले ही गुजर जाएगा !!

अभिनव के मुंह से बात गोली की तरह छूट तो गई पर उसके तुरंत बाद वह ग्लानि से भर गया | दया का भाव जागते ही पूछा- कुछ खाए हो ?

दोन दिन से खुछई नई खाए साब ! अब तो बछुआ ने रोना भी बंद कर दिया | भर्नाई आवाज़ से आदमी ने जवाब दिया |

अभिनव ने घड़ी देखी ... ऑफिस कैटीन खुला होगा10 मिनिट शेष है। गाड़ी सड़क किनारे लगा कर बोला - **चलो साथ में |**

यूँ तो वह खुद भी सामान ला सकता था पर इन बेचारों को यहाँ अकेला छोड़ना सही नहीं था | पुलिस ने देख लिया तो ये और मुसीबत में पड़ जाएंगे | बिस्किट, दूध, फल, नमकीन और जो कुछ भी उपलब्ध था उस परिवार को दिलवा कर अभिनव जी चल पड़े किसी और कहानी की तलाश में |

अभिनव ने आज का अपना कवरेज खतम किया ही था कि किसी ने उसे एक व्हाट्सएप्प वीडियो भेजा जो निःसंदेह ध्यान खींचने वाला था |

‘चलो रमेश भाई ... गांव चले’

कैमरामेन रमेश ने बिना कोई सवाल किये गाड़ी का स्टेयरिंग घुमा दिया और 1 घंटे का सफ़र तय करते ही सिटी न्यूज़ चैनल की टीम निपानिया गांव पहुँच गई। रमेश ने बिना देर किये कैमरा ऑन किया और लाल सिग्नल देखते ही अभिनव ने बोलना शुरू किया।

हां जी .. तो आज हम आए हैं इस गाँव में जिसका नाम है निपानिया !! हमारे साथ है 78 वर्षीय अम्माजी और जी हां!! सुनिए ब्रेकिंग न्यूज़... खास आपके लिए सिर्फ सिटी न्यूज़ में ... कोरोना वायरस कैसा दिखता है.... सुनिए अम्माजी से आँखों देखा हाल..

अम्माजी.. यहाँ देखिये.. ये.. कैमरा में.. हां.. यहाँ देखए.. तो सबसे पहले बताइए आप का नाम क्या है ?

हमार नाम गेंदा है।

तो दर्शकों गेंदा जी हमारे साथ है जो बताएंगी अपनी आप बीती .. अम्मा जी यहाँ सबको नमस्कार कीजिए..अब बताइए कि क्या हुआ था।

अम्मा जी ने गहरी श्वास खींची.. और हकलाते हुए बोलना शुरू किया-

हा तो सभन को हमार प्रणाम ... वो कि दिन क्या हुआ रहा कि हमार को सब घर के अन्दर ही बंद करे रहे बड़े दिनन.. हमार तो प्राण ही अटके रहे .. न तो झाँके हमार यहाँ न कोई बोले न बतियाए.. हम तो बड़े परेशान हो रहे..फिर एक दिन वो छुटकी है न हमार बकरी वो बड़ी चिल्लाए रही तो हमार माथा ठनका.. और हमने तो किया सबको परे और चल पड़े छुटकी तो घास खिलाये .. चुटकी ये इधर और वो उधर.. खुबही दौड़ लगाये रही.. फिर दिन ढलने लगा तो हमको भय लगा कि भई मोदी बोल रहा दिन ढले कोरोना पकड़ लेत है .. तो भाइयो बहनों शाम पड़े सफा बंद है.. हम छुटकी को बहुत ही आवाज़ लगाए रहे पर वो कोई न सुने .. हम लगे उके दूढ़ने.. डर भी बहुतई लग रहा पर बेचारे जीव को कैसे छोड़े..तो भाई साब जे हम आगे बड़े.. तो का देखते है कि वो उधर काला.. एक्को काला... कोरोनो..इत्ती बड़ी बड़ी लाल लाल आँखों से देख रिया.. का बताए.. हमार तो घिघी बंध गई साब !!!

अभिनव- जी हा सुनिए ब्रेकिंग न्यूज़.. निपानिया गांव कि एक बुजुर्ग महिला ने किया कोरोना देखने का दावा !!!

अम्मा- का बताए कित्ता भयानक था !! ये बड़ा काला.. हमे तब से नींद नी ए रही साब | मान गए हम तो कि शाम के बाद से बाहर नी जाना।

अभिनव- तो दर्शकों.. जितने मुँह उतनी बातें.. पर हर बात का लब्बो-लुआब यह है कि घर के भीतर ही सुरक्षा है। बाहर न जाने में ही भलाई है ।

अभिनव गोस्वामी की तरह ही इन दिनों सब पत्रकारों का हाल है !! कोरोनो होना चाहिए खबर में.. खबर चाहे जो हो।

3. तीन (अमीर या गरीब ?)

सबसे ज्यादा मुश्किल जंग होती है खुद से खुद की...जब आपके स्वाभिमान के सामने आपकी ज़रूरत खड़ी हो जाती है ... स्वाभिमान को निगाहें झुकानी ही पड़ती है। एक जिम्मेदार पारिवारिक व्यक्ति यही तो करता है - अपने परिवार की सुरक्षा और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति।

एक-एक फुट की दूरी पर खड़े लोगों की कतार में शामिल प्रकाशचंद इन्ही दलीलों से अपने आपको समझा रहे थे। यूँ तो उन्होंने कभी अपना सिर किसी के सामने नहीं झुकाया मगर आज टोपी पहन कर अपने चेहरे को छुपाने की कोशिश कर रहे हैं। वैसे तो गली के इस नुक्कड़ पर प्रकाशचंद कई बार आए थे मगर गरीबों को बांटने के लिए फल, भोजन या सामान से हमेशा उनके हाथ भरे रहते थे। जब ज़रूरतमंद उन्हें अमीर कहते, उनका सीना गर्व से और चौड़ा हो जाता। आज बांटने वाले के स्थान पर मांगने वाले याचक की तरह खड़े हैं तो शर्मिदा सा महसूस कर रहे हैं।

संकटकाल में बुनियादी धारणाएं बदल जाती हैं। कोविड की बाढ़ ने न अमीर देखा न गरीब। कहानियां सबकी अलग अलग हैं मगर दर्द सबका एक सा। गरीबों के लिए रियायत राहत के नाम पर सरकार ने कई कार्यक्रम चला रखे हैं .. सरकारी कर्मचारियों को वेतन समय पर मिल रहा है ...सच्ची मुश्किल में निजी कर्मों और माध्यम वर्गीय परिवार हैं। कम से कम प्रकाशचंद को तो यही लगता है। अपनी समस्या हमेशा ही बड़ी लगती है न। जब एकलौते बेटे नीरव की प्रख्यात सॉफ्टवेयर कंपनी में नौकरी लगी थी प्रकाशचंद को लगा था जैसे गंगा नहा लिए। घर बनवाते समय जमा पूंजी बचाने का विचार भी नहीं आया था.. सोचा था कि अब तो बेटा कमाने लगा है अब किस बात की चिंता। घर भी इतना आलीशान बनवाया की लोग तारीफ करते न थकते थे। हाँ लोन लेना पड़ गया था पर आजकल बिना लोन लिए घर कौन बनवाता है ?? नीरव के इस तर्क पर मना भी कहा कर पाया था प्रकाश चंद। किसे पता था कि महामारी फैलेगी और सब तहस- नहस हो जाएगा। नीरव को नौकरी से निकाल दिया गया। आय का कोई स्रोत नहीं रहा। मकान बड़ा है.. कपड़े कीमती हैं.. गाड़ी घर के बाहर खड़ी है.. ऐसे में कौन सोचेगा की जेब बिलकुल खाली है। घर में राशन का कोई सामान नहीं बचा। पत्नी और बेटे के भूखे उदास चेहरे ने आखिर प्रकाशचंद को तोड़ दिया और वह यहाँ खड़ा है- गरीबी रेखा के नीचे वालों की लाइन में.. मुफ्त आटा - चावल लेने ले लिए।

विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार देते हुए
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)





वर्ष 2020-21 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (ले.व ह. कार्यालय)			
क्रम संख्या	नाम सर्वश्री एवं श्रीमती	पद	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	प्रभु दयाल	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2020
2.	रघुवीर सिंह रावल	पर्यवेक्षक	31.03.2020
3.	चेत राम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.03.2020
4.	सेवक राम	वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
5.	अशोक कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.06.2020
6.	जगमोहन	वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2020
7.	तारा सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2020
8.	सोमनाथ प्रमाणिक	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2020
9.	धनी राम	वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2020
10.	बाल कृष्ण	वरिष्ठ लेखाकार	31.10.2020
11.	बेली राम कश्यप	वरिष्ठ लेखाकार	31.10.2020
12.	विनोद कुमार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2020
13.	अनिल कुमार शर्मा	वरिष्ठ लेखाकार	30.11.2020
14.	नीलम कुमार	पर्यवेक्षक	31.12.2020
15.	अरुणा शर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	09.01.2021
16.	रंजना मेहता	पर्यवेक्षक	31.01.2021
17.	सोम नाथ	वरिष्ठ लेखाकार	31.01.2021
18.	सुरेश कुमार	सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2021
19.	हंस राज	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.03.2021
20.	अरुण कुमार गुप्ता	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2021
21.	आशा ठाकुर	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2021
वर्ष 2020-21 में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (लेखापरीक्षा कार्यालय)			
क्रम संख्या	नाम सर्वश्री एवं श्रीमती	पद	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	सुनिल बग्गा	पर्यवेक्षक	30.04.2020
2.	भुपिंद्र पाल शर्मा	पर्यवेक्षक	30.06.2020
3.	नंद लाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.07.2020
4.	ऊषा देवी	एमटीएस	31.07.2020
5.	हीरा लाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30.09.2020
6.	सूरत राम	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.10.2020
7.	देवेन्द्र सिंह जरेठ	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.10.2020
8.	रोशन लाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30.11.2020
9.	बाल कृष्ण पुरी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.01.2021

अलविदा

श्री सुरेन्द्र कुमार (व.ले.प) दिनांक 16.07.2020, श्री कमल दत्त (व.ले.प.) दिनांक 18.11.2020, श्री प्रमोद कुमार कौशल (व.ले.अ.) दिनांक 06.12.2020, श्री योगी शर्मा (व.ले.प.अ.) दिनांक 24.12.2020 को अपनी जीवन-यात्रा पूरी करके अखण्ड ज्योति में समा गये। हिम-प्रभा परिवार की ओर से इन दिवंगत आत्माओं के प्रति भाव-भीनी श्रद्धांजलि।

हिन्दी पखवाड़ा - 2021

विजेताओं की सूची

क्रम संख्या	प्रतियोगिता	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
1.	अनुवाद (15.9.2021)	श्री सुदर्शन शर्मा स.ले.अ.	श्री योगेश स.ले.प.अ	श्री दयासागर (व.ले.प)
2.	वाद-विवाद (16.9.2021)	श्री शैलेश सोनी स.ले.अ.	श्री योगेश स.ले.प.अ	श्री राहुल पुंज, एमटीएस
3.	आशु भाषण (17.9.2021)	श्री राहुल पुंज, एम.टी.एस	श्री शैलेश सोनी स.ले.अ.	श्री अरूण कुमार डी.ई.ओ.
4.	श्रुतलेख (20.9.2021)	श्री उज्जवल कुमार एम.टी.एस	सुश्री अमिता वर्मा स.ले.अ.	सुश्री आयुषी बरनवाल स.ले.प.अ.
5.	कविता पाठ (21.9.2021)	सुश्री समता खानचंदानी क. हि. अनुवादक	श्री शैलेश सोनी स.ले.अ.	सुश्री कीर्ति चतुर्वेदी, वरिष्ठ लेखाकार
6.	निबंध (22.9.2021)	श्री अरूण कुमार डी.ई.ओ.	श्री सुदर्शन शर्मा स.ले.अ.	श्री दयासागर (व.ले.प)
7.	टिप्पण - आलेखन (23.9.2021)	श्री दयासागर व.ले.प.	श्री मुकेन्द्र कुमार स.ले.प.अ.	श्री संजीत कुमार (स.ले.प.अ.)
8.	कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण (24.9.2021)	श्री अजय सिंह डी.ई.ओ.	श्री प्रमोद वर्मा ले.प.	श्रीमती सत्यावती स. पर्यवेक्षक
9.	चित्र लेखन (27.9.2021)	श्री उज्जवल कुमार एम.टी.एस	श्रीमती सीमा सहोता स.ले.अ.	श्री योगेश स.ले.प.अ

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	“क” क्षेत्र	“ख” क्षेत्र	“ग” क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	40%	30%	20%
			(न्यूनतम अनुभाग)	
			सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।	



कांगड़ा का किला



बैजनाथ मंदिर



बुरांश

हिमाचल का राजकीय पुष्प

हिन्दी